सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 131, नई दिल्ली, रविवार 20 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 दस्तक के विद्यार्थियों को रोटरी क्लब मयूर विहार ने वितरित की स्टेशनरी
06 आज बच्चों के लिए लाभकारी है वैदिक गणित विजय गर्ग
08 सीबीआई जांच हो, साबित हुआ तो राजनीति छोड़ दूंगा

टेम्पल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) द्वारा दिल्ली में लेन ड्राइविंग के प्रति जागरूकता अभियान जल्द होगा शुरू

इस कार्य में स्वयंसेवक के जुड़ने हेतु गूगल फार्म हुआ शुरू जनता को जागरूक करने हेतु दिल्ली के सभी क्षेत्रों से स्वयंसेवक/ कार्यकर्ताओं को जुड़ने की अपील जारी

भारत में सड़क पर तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना नहीं, बल्कि लेन अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है

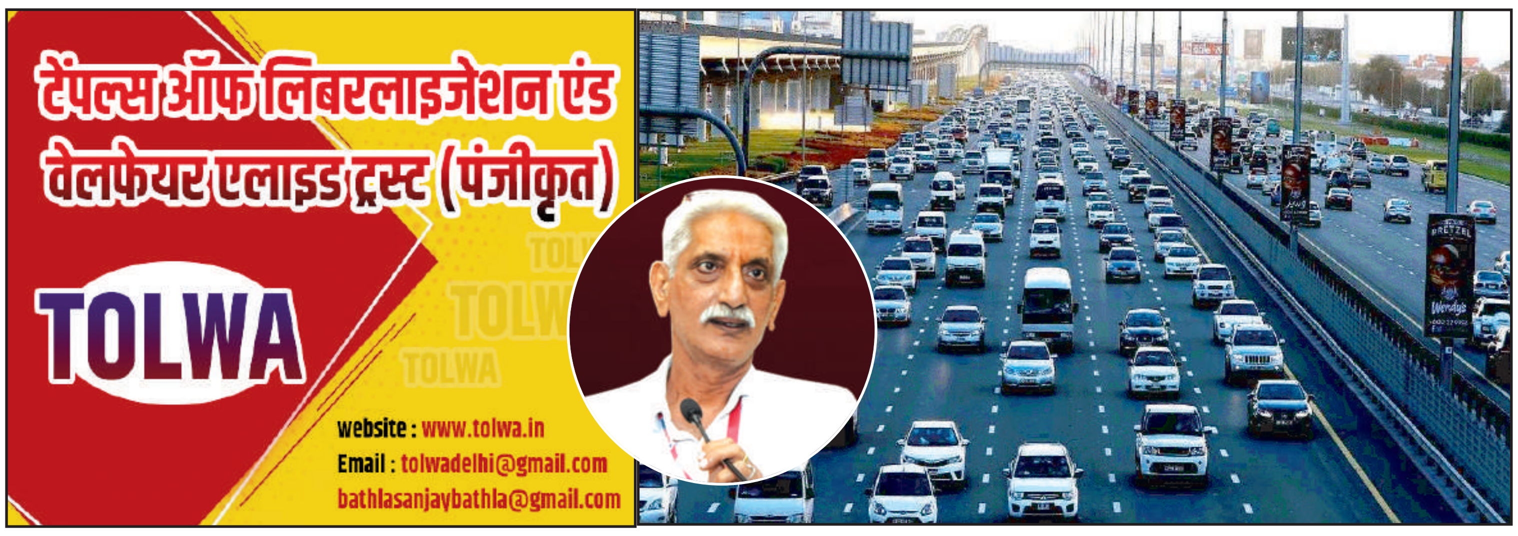

पिंकी कुंडू, सह- संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार बाटला पिछले कई सालों से यह बात कहते आ रहे की दिल्ली की सड़को पर तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना नहीं, बल्कि लेन अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है'।

पीछे कुछ समय पूर्व केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी यह बताया की लेन अनुशासनहीनता के कारण भारत में सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लेन अनुशासनहीनता के चिंताजनक मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया और इसे भारत में सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण बताया है। लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान बोलते हुए गडकरी ने एक व्यक्तिगत उदाहरण साझा करते हुए बताया कि मुंबई में ट्रैफिक उल्लंघन के लिए उनकी खुद की कार पर भी दो बार जुर्माना लगाया गया था। उन्होंने जोर देकर कहा कि ओवरस्पीडिंग अक्सर सुर्खियां बटोरती है। लेकिन लेन अनुशासन का पालन ना करना भारतीय सड़कों पर एक बहुत गंभीर मुद्दा है। अगर अनुशासित तरीके से ड्राइविंग की जाए तो तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना भी खतरनाक नहीं है। जैसा कि कई विकसित देशों में देखा गया है तेज कारें सुरक्षित तरीके से चलती हैं पर लेन के इस्तेमाल जैसे बुनियादी ट्रैफिक मानदंडों की अनदेखी दुर्घटनाओं के जोखिम को बढ़ाती है। गडकरी ने बताया, "यह रफ्तार नहीं बल्कि अनुशासनहीन ड्राइविंग के कारण होने वाली अराजकता है जो हमारी सड़कों को खतरनाक बनाती है।" भारतीय नागरिकों, खासकर युवा पीढ़ी को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर देना सबसे अधिक आवश्यक है। उन्होंने सुझाव दिया कि कम उम्र से ही सड़क अनुशासन को बढ़ावा देने से देश की ड्राइविंग संस्कृति में काफी सुधार हो सकता है। उन्होंने कहा, "लंबे समय तक व्यवहार में बदलाव लाने के लिए बच्चों को भी ट्रैफिक नियमों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार ने उल्लंघनों की निगरानी और दंड लगाने के लिए सड़कों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। गडकरी ने सांसदों से भी अपने निर्वाचन क्षेत्रों में सुरक्षित ड्राइविंग प्रथाओं की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उदाहरण पेश करने और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया। गडकरी की टिप्पणियों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सड़क दुर्घटनाओं को कम करने में सांसदों की सामूहिक जिम्मेदारी पर रोशनी डाली। उन्होंने सदन के सदस्यों से लोगों को ट्रैफिक नियमों और लेन अनुशासन के जीवन-रक्षक महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए अपने समुदायों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह किया।

लेन अनुशासनहीनता: भारत में दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण लेन अनुशासनहीनता ही है। भारत के खतरनाक सड़क दुर्घटना आंकड़ों में प्राथमिक योगदानकर्ताओं में से एक है। रॉन्ग साइड ड्राइविंग और बिना इंडिकेटर के लेन बदलने जैसी प्रथाएं न सिर्फ नियम तोड़ने वालों को खतरे में डालती हैं बल्कि अन्य सड़क यूजर्स की सुरक्षा को भी खतरे में डालती हैं। यह व्यवहार अनावश्यक अराजकता, देरी और, दुखद रूप से, रोके जा सकने वाली मौतों का कारण बनते हैं।

टेम्पल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) अब ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन के साथ मिलकर दिल्ली में लेन ड्राइविंग के अनुशासन के प्रति जागरूकता अभियान शुरू करेगा।

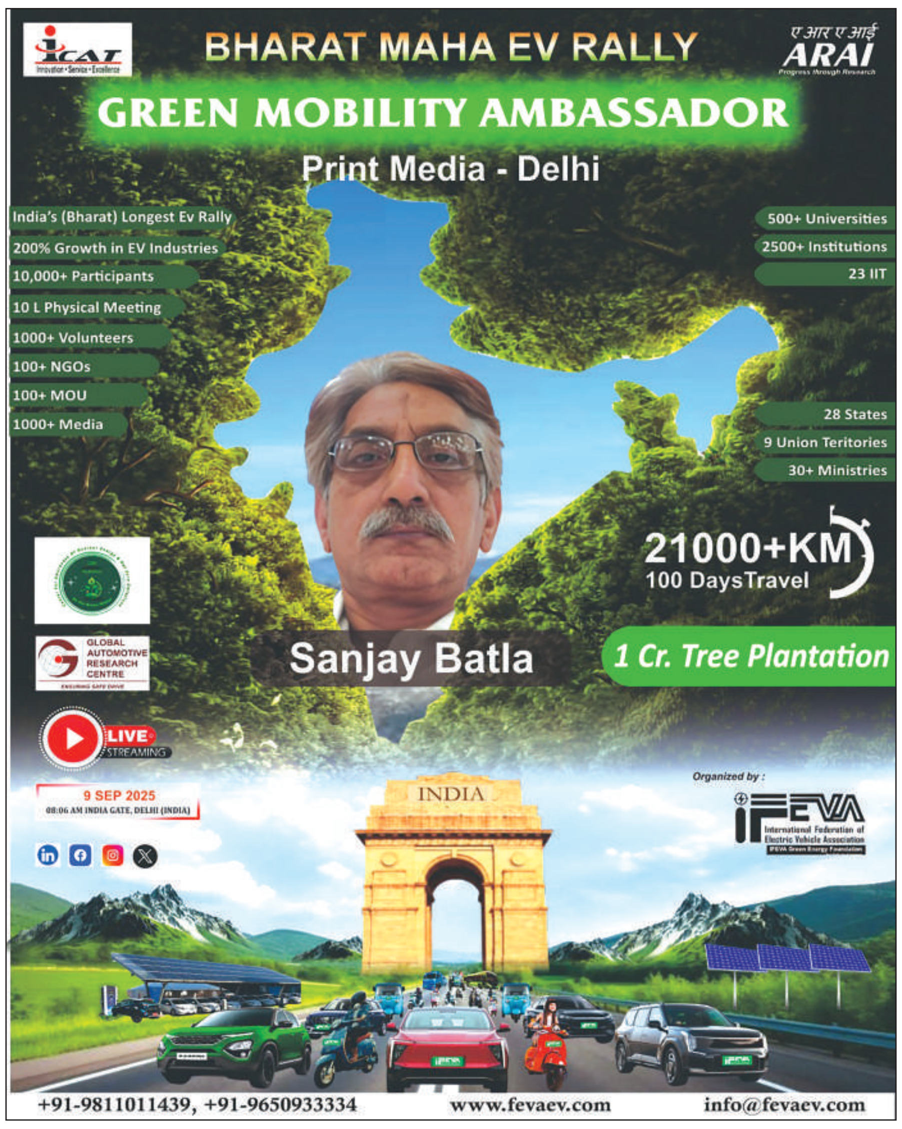

असम के साराईघाट पर 1473 करोड़ रुपये से बनेगा दूसरा रेल सह सड़क पुल, उद्योग-पर्यटन को मिलेगा बल

परिवहन विशेष नयूज

असम के ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित ऐतिहासिक साराईघाट पुल के समानांतर अब एक और रेल सह सड़क (डबल डेकर: पुल बनने जा रहा है। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) के तहत इस महत्वाकांक्षी परियोजना को मंजूरी दे दी गई है। इस नए रेल सह सड़क पुल बनने से असम के गुवाहाटी क्षेत्र में कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। यह परियोजना अगठोरी से कामाख्या तक की रेलवे लाइन डबलिंग योजना का हिस्सा है, जिसकी अनुमानित लागत 1,473.77 करोड़ है। इसे दिसंबर २०२९ तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह पुल कुल 7.06२ किलोमीटर लंबा होगा। इसमें 1.3 किलोमीटर लंबा स्टील कंपोजिट गर्डर ब्रिज ब्रह्मपुत्र नदी पर बनाया जाएगा। इसका डबल-डेकर डिज़ाइन खास होगा, निचले तल पर दोहरी रेलवे लाइन और ऊपरी तल पर तीन-लेन सड़क के साथ फुटपाथ होंगे।

अब तक क्या-क्या हो चुका है

एनएफआर के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कपिंजल किशोर शर्मा ने बताया कि रेलवे बोर्ड ने फरवरी २०२४ में विस्तृत प्राक्कलन (डिटेल्ड एस्टीमेट) को स्वीकृति दी थी, जबकि मार्च २०२५ में डिज़ाइन ड्रॉइंग और रिपोर्ट को अंतिम मंजूरी प्रदान की गई। इस दौरान सब-स्ट्रक्चर और सुपर-स्ट्रक्चर डिज़ाइन के लिए जरूरी जियोटेक्निकल जांच भी पूरी हो चुकी है। परियोजना के निर्माण के लिए ईपीसी मोड (इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन) में टेंडर जारी कर दिया गया है। टेंडर प्रक्रिया के पूरा होते ही निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

कैसा होगा यह नया पुल

शर्मा ने बताया कि यह पुल कुल 7.06२ किलोमीटर लंबा होगा। इसमें 1.3 किलोमीटर लंबा स्टील कंपोजिट गर्डर ब्रिज ब्रह्मपुत्र नदी पर बनाया जाएगा। इसका डबल-डेकर डिज़ाइन खास होगा, निचले तल पर दोहरी रेलवे लाइन और ऊपरी तल पर तीन-लेन सड़क के साथ फुटपाथ होंगे। उत्तर दिशा की ओर (अगठोरी) से २.694 किलोमीटर लंबा संपर्क मार्ग होगा। दक्षिण दिशा की ओर (कामाख्या) से 3.07 किलोमीटर का अप्रोच बनाया जाएगा।

इस पुल के बनने से क्या होंगे फायदे

यह पुल न केवल गुवाहाटी क्षेत्र में रेल और सड़क यातायात की क्षमता को बढ़ाएगा, बल्कि उद्योग, पर्यटन और व्यापार को भी गति देगा। अधिकारियों के अनुसार, परियोजना के चलते स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। अधिकारी ने बताया, यह पुल मौजूदा साराईघाट पुल का पूरक होगा और पूर्वोत्तर भारत की परिवहन संरचना में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। यह परियोजना असम की कनेक्टिविटी और पूर्वोत्तर भारत के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

दिल्ली मेट्रो में जरा संभल कर ! सफर करनेवाले 2,320 पुरुष यात्रियों पर लगा जुर्माना; जानें क्या है वजह

दिल्ली मेट्रो ने 2024-25 में महिला कोच में सफर करने वाले 2320 पुरुष यात्रियों पर जुर्माना लगाया है। सबसे अधिक 443 पुरुष यात्रियों पर मई में जुर्माना लगा। मेट्रो में उद्घोषणा के बावजूद कई पुरुष यात्री महिला कोच में सफर करते हैं जिस पर 250 रुपये का जुर्माना है। यह कार्रवाई फ्लाइंग स्क्वायड टीम और सीआईएसएफ के जवानों ने की।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने एक वर्ष में मेट्रो के महिला कोच में सफर करने 2320 पुरुष यात्रियों के खिलाफ जुर्माना ठोका है। डीएमआरसी के अनुसार इन पुरुष यात्रियों के खिलाफ वर्ष 2024-25 में जुर्माना किया गया था। मेट्रो की फ्लाइंग स्क्वायड टीम व सीआइएसएफ के जवानों ने औचक निरीक्षण में उन पुरुष यात्रियों को महिला कोच में सफर करते हुए पकड़ा था।

मेट्रो में पहला कोच महिलाओं के लिए आरक्षित होता है। इस महिला कोच में पुरुष यात्रियों का सफर करना वर्जित होता है। इसलिए महिला कोच में पुरुष यात्रियों का सफर करना गैर कानूनी है। महिला कोच में पुरुष यात्रियों के सफर करने पर 250 रुपये जुर्माना है।

मई के माह में सबसे अधिक 443 पुरुष यात्रियों के खिलाफ जुर्माना

डीएमआरसी का कहना है कि वर्ष 2024-25 में मई के माह में सबसे अधिक 443 पुरुष यात्रियों के खिलाफ जुर्माना लगाया गया था। इसके अलावा अप्रैल में 419 और सितंबर में 397 पुरुष यात्रियों के खिलाफ जुर्माना किया गया था। मेट्रो में उद्घोषणा भी की जाती है कि महिला कोच में पुरुष यात्रियों का सफर करना गैर कानूनी है। फिर भी कई पुरुष यात्री महिला कोच में सफर करते देखे जाते हैं।

सिर्फ बस अड्डा नहीं, अब बनेंगे हाईटेक हब! यूपी में बदल जाएगा सफर का अनुभव

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश सरकार राज्य की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के लिए परिवहन विभाग को आधुनिक बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने आधुनिक बस अड्डों प्रशिक्षित ड्राइवरों और स्मार्ट इंडिकेटर प्रणाली के माध्यम से परिवहन सेवाओं को बेहतर बनाने पर जोर दिया। स्मार्ट इंडिकेटर प्रणाली को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू किया गया है।

लखनऊ। प्रदेश को एक ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में परिवहन विभाग भी तेजी से कदम बढ़ा रहा है। इसमें स्मार्ट बस अड्डे, प्रशिक्षित ड्राइवर, हाइटेक सिस्टम से परिवहन विभाग इसे और रफ्तार देगा।

शुक्रवार को परिवहन निगम मुख्यालय में विभाग की उच्चस्तरीय बैठक में इस लक्ष्य में विभाग की भूमिका पर विस्तार से चर्चा हुई। परामर्शदाता संस्था डीलाइट ने प्रस्तुति देकर बताया कि परिवहन और लाजिस्टिक्स सेक्टर किस तरह प्रदेश की आर्थिक विकास यात्रा में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

अध्यक्षता करते हुए परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में परिवहन विभाग की भूमिका बेहद अहम है। अच्छी सड़कों, सुविधाजनक और सुरक्षित यात्रा, आधुनिक बस अड्डों और प्रशिक्षित ड्राइवरों के माध्यम से केवल यात्री सुविधाएं ही नहीं बढ़ेंगी, बल्कि इससे आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति मिलेगी।

उन्होंने विशेष रूप से ड्राइवर प्रशिक्षण केंद्रों में गुणवत्ता बनाए रखने और ग्रामीण-शहरी दोनों क्षेत्रों में परिवहन सेवाएं सशक्त करने पर जोर दिया। बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा की गई। इसमें शहरी परिवहन में लागू की जा रही स्मार्ट इंडिकेटर प्रणाली, ड्राइवर प्रशिक्षण के लिए बनाए गए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी), ड्राइवर ट्रेनिंग सेंटरों (डीटीसी) की प्रगति और पीपीपी माडल पर बन रहे 23 आधुनिक बस स्टेशनों की स्थिति शामिल रही।

अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश में ट्रैफिक सुधारने के लिए स्मार्ट इंडिकेटर प्रणाली की शुरुआत पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर की गई है। इसे सफल होने पर राज्यभर में लागू किया जाएगा। वहीं, ड्राइवरों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एसओपी तैयार कर विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में लागू किया गया है।

इससे सड़क सुरक्षा में सुधार और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। बैठक में प्रमुख सचिव परिवहन, परिवहन आयुक्त, विशेष सचिव केपी सिंह, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक, मुख्यमंत्री के सलाहकार केवी राजू और परिवहन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश में ट्रैफिक सुधारने के लिए स्मार्ट इंडिकेटर प्रणाली की शुरुआत पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर की गई है। इसे सफल होने पर राज्यभर में लागू किया जाएगा। वहीं, ड्राइवरों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एसओपी तैयार कर विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में लागू किया गया है।

कुंडली में व्यक्ति के राक्षस गण बताते हैं उसका आचरण

ज्योतिष शास्त्र में व्यक्ति के 3 गणों के बारे में गणना की गई है। कुंडली में व्यक्ति के ये गण उसके स्वभाव, खासियत और अवगुणों की गणना करते हैं। ये 3 गण होते हैं देव, मानव और राक्षस गण।

कुंडली में व्यक्ति के राक्षस गण बताते हैं उसका आचरण, इन लोगों में छिपी होती हैं कई खासियतें।

कुंडली के गण

==========

ज्योतिष शास्त्र में व्यक्ति के 3 गणों के बारे में गणना की गई है। कुंडली में व्यक्ति के ये गण उसके स्वभाव, खासियत और अवगुणों की गणना करते हैं। ये 3 गण होते हैं देव, मानव और राक्षस गण। आमतौर पर राक्षस गण नाम सुनते ही लोगों के दिमाग में राक्षस जैसी छवि आ जाती है। राक्षस गण वाले लोगों को लेकर बुरी राय बन जाती है। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। बता दें कि तीन गणों में देव गण को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। लेकिन तीनों गणों की अपनी खासियत होती है।

देव गणः ज्योतिषीयों के अनुसार देव गण के लोगों को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। देव गण के लोगों में कापी गुण देवताओं वाले होते हैं। ये लोग अच्छा आचरण करने वाले, ईमानदार, चरित्रवान, संस्कारी, कोमल हृदय,दयालु, बुद्धिमान और बहुत ही सकारात्मक सोच वाले होते हैं। ये लोग धर्म पर बहुत ध्यान देते हैं साथ ही दान में भी विश्वास करते हैं। दूसरों की मदद के लिए भी ये लोग हमेशा आगे रहते हैं।

मानव गणः ज्योतिष शास्त्र में मानव गण के लोगों को लेकर कहा जाता है कि ये लोग कर्मठ होते हैं। अपनी मेहनत के दम प र आगे बढ़ते हैं और खूब पैसा कमाते हैं। जीवन में सम्मान पाते हैं. ये लोग काफी संभलकर चलते हैं।

राक्षस गणः राक्षस गण के लोगों अच्छथे खासे नकारात्मक होते हैं। लेकिन कोशिशकरने पर ये खुद को सकारात्मक कर सकते हैं। राक्षस गण के लोगों में एक खासियत होती है कि ये लोग नकारात्मक चीजों, घटनाओं को जल्दी से भांप जाते हैं। निडर और साहसी के कारण ये हर स्थिति का डटकर मुकाबला करते हैं। ये लोग साफ और कड़वा बोलते हैं।

देव और राक्षस गणों को आपस में विवाह नहीं करना चाहिए। क्योंकि इन दोनों के स्वभाव अच्छा खासा अंतर होता है। जिस कारण इनकी जम नहीं पाती। देव गण के जातकों के लिए मनुष्य गण का लाइफ पार्टनर उत्तम रहता है। वहीं मनुष्य गण के जातक देव और राक्षस दोनों से विवाह कर सकते हैं।

डरा नहीं सकता कोई

==============

राक्षस गण वाले व्यक्तियों में एक नैसर्गिक गुण होता है। यदि उनके आस पास कोई नकारात्मक शक्ति होती हैं तो उन्हें उसका तुरंत ही अहसास हो जाता है। यही नहीं कई बार तो इनको ये शक्तियां दिखाई भी दे जाती है, लेकिन फिर भी ये शक्तियां इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। इस गण वाले लोग उनसे जल्द ही भयभीत नहीं होते। राक्षस गण वाले साहसी होते हैं और किसी भी विपरीत परिस्थिति से नहीं घबराते।

इन नक्षत्रों वाले होते हैं राक्षस गण के

====================

कृतिका, अश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग राक्षस गण के होते हैं।

कम खाने वाले होते हैं देव गण वाले

=====================

देव गण वाले व्यक्ति बुद्धिमान, कोमल हृदय, कम खाने वाले और दानी होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने से पहले दूसरों की भलाई के बारे में सोचते हैं।

समाज में सम्मान पाते है मनुष्य गुण वाले

======================

मनुष्य गुण वाले लोग धनवान तो होते ही हैं, साथ ही धनुर्विद्या में ज्ञाता भी होते हैं। ये लोग समाज में काफी सम्मान हासिल करते हैं।

कहानी: "तीज का झूला और माई का आशीर्वाद"

डॉ. सत्यवान 'सौरभ'

सावन की रिमझिम बारिश, खेतों की हरियाली, पीपल के पेड़ पर पड़े झूले, और औरतों के गीतों की गूंज — ये सब मिलकर तीज को सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि एक भावनात्मक अनुभव बना देते हैं। हर औरत के जीवन में तीज की एक अपनी कहानी होती है — कुछ के लिए यह श्रृंगार का पर्व है, कुछ के लिए यादों का झूला, और कुछ के लिए एक मौका अपनी अस्मिता को फिर से पहचानने का।

यह कहानी एक ऐसी ही स्त्री की है — राधा, जो परंपराओं के बीच अपनी आवाज़ को तलाशती है। यह कहानी सिर्फ तीज मनाने की नहीं, बल्कि मां-बेटी के रिश्ते, ससुराल की रूढ़ियों और एक स्त्री की आत्मसम्मान की भी है।

गांव के पूरब छोर पर एक पीपल का पेड़ था — बहुत पुराना, बहुत विशाल। सावन की पहली बूंद गिरते ही उस पर झूले बंध जाते थे। गांव की औरतें लाल-हरे रंग की साड़ियों में सजकर झूला झूलतीं, गीत गातीं —

"झूला पड़ा पीपल के नीचे, साजन आयो सपना रीचे..."

राधा की मां, शारदा देवी, हर साल इसी पेड़ के नीचे झूला डालती थीं। कभी राधा अपनी सहेलियों संग घंटों झूला झूलती थी। सावन के गीले दिन, गुझियों की मिठास, और माँ के हाथों की मेंहदी — राधा की बचपन की तीजें इनकी गोद में पली थीं।

पर अब वो सब बीते कल की बात थी।

राधा का ब्याह तीन साल पहले शहर के एक खाते-पीते परिवार में हुआ था। पति सुलझा हुआ था, पर सास-ससुर पुराने विचारों के थे। बहू को मायके भेजना उन्हें ठीक नहीं लगता। उन्हें लगता कि लड़की मायके जाकर बिगड़ जाती है।

तीन सालों में राधा को तीज पर मायके आने की इजाजत नहीं मिली थी।

शारदा देवी हर साल तीज के करीब आते ही अपने आंगन में झूला डाल देतीं। एक बार फिर इस साल भी सावन आया। गांव की औरतें पीले-हरे रंग की साड़ियाँ पहनकर श्रृंगार कर रही थीं। झूले पर गीतों की गूंज थी। लेकिन शारदा देवी के आंगन में सिर्फ सन्नाटा था।

शाम को उन्होंने तांबे की थाली में गुझिया सजाई, घेवर पर मलाई डाली, और एक छोटी कटोरी में सिंदूर रखा।

"इस बार राधा ज़रूर आएगी," उन्होंने खुद से कहा।

पर कोई डाक नहीं आई। कोई संदेश, कोई फोन नहीं।

हर साल की तरह इस साल भी आंखें दरवाजे की ओर सूनी रहीं।

राधा का मन बेचैन था। सास ने सुबह ही कहा था –

"तीज का व्रत करना है तो करो, लेकिन मायके जाने का नाम मत लेना। हम कोई गंवार नहीं हैं कि हर साल बेटी को भेज दें। ससुराल में ही साज-श्रृंगार करो।"

राधा ने चुपचाप अपनी साड़ी तह की, मेंहदी की डिब्बी उठाई और छत पर चली गई। लेकिन छत से दिखते आसमान में मां की झुकी आंखें और पीपल का झूला ही नजर आता रहा।

आखिर राधा ने निर्णय लिया।

सास-ससुर से बिना कहे, पति को एक चिट्ठी छोड़कर, राधा अपने गांव के लिए निकल पड़ी। एक पुरानी साड़ी में, कंधे पर छोटा सा बैग लिए। कोई जेवर नहीं, कोई दिखावा नहीं — सिर्फ दिल में एक तमन्नाः माँ की गोद में तीज मनाने की।

बस बदलते हुए, खेतों से गुज़रते हुए, राधा ने कई और औरतों को देखा — कुछ पति के साथ, कुछ सहेलियों के संग। सबके चेहरे पर सावन की मुस्कान थी, पर राधा की मुस्कान थोड़ी डरी हुई थी – जैसे डर को ही मात देने चली हो।

गांव पहुंचते ही राधा के कदम सीधे पीपल की ओर चले। पर वहां न कोई झूला था, न कोई हंसी।

"माई!" – जैसे ही आवाज आई, शारदा देवी चौके से बाहर दौड़ीं।

कुछ पलों तक मां-बेटी बस एक-दूसरे को देखती रहीं। और फिर शारदा देवी ने राधा को सीने से लगा लिया।

"बिटिया... तू आ गई?"

राधा की आंखों से आंसू बहने लगे — वो आंसू जो तीन तीजों से थमे हुए थे।

राधा ने आंगन को फिर से सजाया। मां ने पीपल के पेड़ के नीचे झूला बांधा। राधा ने झूला झूला, गीत गाए, गुझिया खाई, और सिन्दूर से मांग भरी।

माँ ने कलाई पर राखी की तरह हरी चूड़ियाँ पहनाई और कहा —

"तेरे आने से मेरी तीज पूरी हुई। बेटियाँ त्योहार लेकर आती हैं, और तू तो अपने साथ मेरी सांसें भी ले आई।"

राधा ने पहली बार महसूस किया कि तीज का असली श्रृंगार माँ के आंचल से होता है।

तीज की रात राधा ने माँ से कहा,

"माँ, क्या मैं वापस जाऊं? क्या ये गलत था?"

शारदा देवी ने राधा का माथा चूमते हुए कहा —

"बिटिया, तीज सिर्फ पति की लंबी उम्र का व्रत नहीं है। ये एक स्त्री के भाव, उसके रिश्ते, और उसकी पहचान का उत्सव है। अगर एक औरत अपनी खुशी के लिए कदम बढ़ाए, तो वो गलत नहीं — वो साहस होता है।"

"तू लौट जा, लेकिन सिर झुकाकर नहीं, सिर उठाकर। तुझे जो समझना है, वो तुझे समझाएगा। और अगर न समझे, तो तू खुद को मत खोना।"

तीज की अगली सुबह राधा ने माँ को गले लगाकर विदा ली। इस बार हाथ में सिर्फ झोला नहीं था, मन में आत्मविश्वास भी था।

गांव की पगडंडी पर चलते हुए राधा ने पीपल के पेड़ को देखा। झूला हवा में हिल रहा था — जैसे उसे आशीर्वाद दे रहा हो।

तीज अब राधा के लिए सिर्फ व्रत का दिन नहीं था। यह एक संकल्प बन चुका था — खुद को समझने, माँ से मिलने, और अपनी बात कहने का।

यह कहानी हर उस औरत की है जो तीज पर सिर्फ श्रृंगार नहीं, स्वाभिमान भी पहनती है।

✨ सीख और संदेश

तीज एक स्त्री के भीतर के प्रेम, त्याग और साहस का पर्व है।

हर लड़की को अपना मन और अपनी इच्छाएं अभिव्यक्त करने का अधिकार है।

मां की गोद, बेटी की हिम्मत, और समाज की समझ — ये तीनों मिलें तो हर तीज सचमुच पावन हो।

रोजाना गायत्री चालीसा का पाठ करने से पूरी होगी हर मनोकामना, जानिए धार्मिक महत्व

अनन्या मिश्रा

मां गायत्री की पूजा करने से व्यक्ति को समृद्धि, ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति होती है। बता दें कि यदि कोई जातक की कोई मनोकामना है, तो उसको पूरा करने के लिए रोजाना गायत्री चालीसा का पाठ करना चाहिए।

हिंदू धर्म में मां गायत्री को वेदों की जननी, ज्ञान और पवित्रता की देवी माना जाता है। मां गायत्री को वेदों की माता, देवमाता और विश्वमाता के रूप में भी जाना जाता है। मां गायत्री को पांच मुख वाली देवी के रूप में दर्शाया गया है। उनके यह पांच मुख पंचतत्वों का प्रतीक है। मां गायत्री की पूजा करने से व्यक्ति को समृद्धि, ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति होती है। बता दें कि यदि कोई जातक की कोई मनोकामना है, तो उसको पूरा करने के लिए रोजाना गायत्री चालीसा का पाठ करना चाहिए। नियमित रूप से गायत्री चालीसा का पाठ करने से जातक को बुद्धि और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

गायत्री चालीसा

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शान्ति कान्ति जागृति प्रगति रचना शक्ति अखण्ड॥
जगत जननी मंगल करनि गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम॥
भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी।
गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अक्षर चौबीस परम पुनीता।
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा।
सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसा रूढ़ सितंबर धारी।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई।
सुख उपजत दुख दुर्मति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं।
जो शारद शत मुख गुन गावैं॥
चार वेद की मात पुनीता।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महामंत्र जितने जग माहीं।
कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै।
आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी।
कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥

महिमा अपरम्पार तुम्हारी।
जय जय जय त्रिपदा भय हारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना।
तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न कलेसा॥
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई।
माता तुम सब ठौर समाई॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक पोषक नाशक त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी।
तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा करें सब कोई॥
मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें।
रोगी रोग रहित हो जावें॥
दरिद्र मिटै कटै सब पीरा।
नाशै दुख हरै भव भीरा॥
गृह कलेश चित चिंता भारी।
नासै गायत्री भय हारी॥
संतति हीन सुसंतति पावें।
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें॥
भूत पिशाच सबै भय खावें।
यम के दूत निकट नहिं आवें॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सतगुरु सो दीक्षा पावें।
सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करै सुरुचि बड़भागी।
लहै मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी।
आरत अर्थी चिंतित भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें।
सो सो मन वांछित फल पावें॥
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ।
धन वैभव यश तेज उछाहू॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना।
जे यह पाठ करै धरि ध्याना॥

दोहा

यह चालीसा भक्ति युत पाठ करे जो कोई।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होई॥

गायत्री चालीसा पढ़ने का महत्व

रोजाना गायत्री चालीसा का पाठ करने से बुद्धि तेज होती है और ज्ञान में भी वृद्धि होती है। गायत्री चालीसा का नियमित पाठ करने से जीवन में आने वाले कष्ट और परेशानियां दूर होती हैं। वहीं अगर किसी जातक को रोग दोष का सामना करना पड़ता है, तो इस गायत्री चालीसा का पाठ करने से लाभ मिल सकता है। इस चालीसा का नियमित पाठ करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी हो सकती हैं।

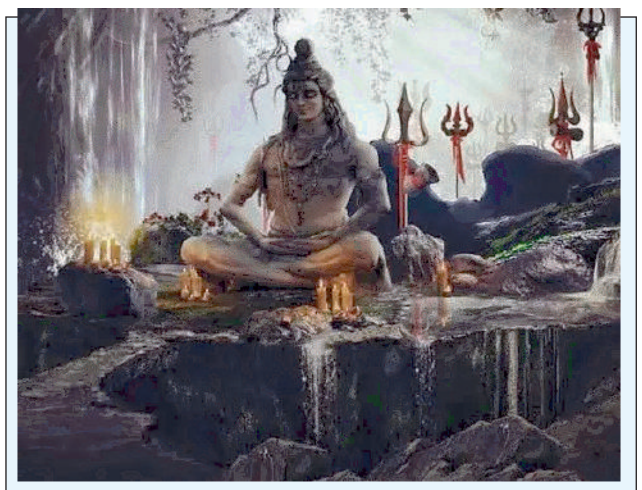

।। शिव तत्व विचार ।।

भगवान शिव गले में सर्पों की माला पहनते हैं पर कभी भी अपनी शांति का त्याग नहीं करते हैं। सर्पों की माला धारण करना अर्थात्‌अनेक कठिनाइयों को अपने ऊपर ले लेना। जीवन है तो मुश्किलें तो आयेंगी, बस जो उन्हें हँसके सह लेता है, वह शिव बन जाता है और जो उन्हें नहीं सह पाता वह शव बन जाता है। मुश्किलों का समाधान उनसे मुकर जाना नहीं है अपितु मुस्कुराकर सामना करने में है। विषम घड़ी में आप अपने चेहरे पर मुस्कान लाने की हिम्मत जुटा पाते हैं तो फिर आपकी आंतरिक शांति भंग करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। भगवान शिव के गले में सर्पों की माला हमें यह सन्देश देती है, कि मुश्किलें तो किसी को भी नहीं छोड़ती बस आप अपनी हिम्मत और मुस्कान कभी मत छोड़ना। गले में विषमता के विषधर होने के बावजूद भी आनंद और प्रसन्नता में जीना भगवान महादेव के जीवन से सीखना चाहिए।

खाना पकाने के कुछ आसान उपाय

खाने का नाम सुनते ही मुंह में पानी आ जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इंसान के दिल का रास्ता उसके पेट से होकर गुजरता है। ऐसा देखा गया है कि खाना बनाने का शौक अक्सर महिलाओं में पाया जाता है और ऐसा कहा जाता है कि महिलाओं को कुकिंग (खाना बनाना) में बहुत आनंद आता है।

कहा जाता है, जो स्वाद मां के हाथ में होता है वो किसी और में नहीं। लेकिन हम आज की इस भाग-दौड़भरी जिंदगी में कई बार खाना बनाने के बेसिक टिप्स भूल जाते हैं।

1. अपने कार्यक्षेत्र के लिए योजना बनाएं और सभी काम में आने वाले उपकरणों को व्यवस्थित रखें। काम में आने वाले और सर्व करने के लिए इस्तेमाल लिए जाने वाले बर्तनों को निकालकर और सामने रखें।
2. अपने किचन (अपनी रसोई) में तेज धार वाले चाकू रखें जिससे आप जल्दी और आसानी से सब्जियां काट सकेंगी और इससे आपका समय भी बचेगा।
3. खाना बनाने से पहले सारी जरूरी सामग्री तैयार रखें ताकि आपको खाना बनाने में आसानी हो।
4. अगर आप कुछ उबलने के लिए रख रही हैं तो ध्यान रखें कि प्रेशर कुकर या पैन का ढक्कन बंद हो, इससे खाना जल्दी उबलेगा और आप गैस में भी बचत कर सकेंगी।
5. अगर आप बैकिंग करने जा रही हैं तो ध्यान रहे कि ओवन कुछ देर पहले ही गरम होने रख दें, उसके बाद ही अपनी डिश उसमें डालें।
6. अगर आप सब्जियों को उबालकर इस्तेमाल करने वाली हैं तो उसके लिए उबला हुआ पानी तैयार रखें। आपका काम आसान हो जाएगा।
7. अपना समय बचाने के लिए उन आयटम्स (डिशेज) को पहले से पकाने रख दें या पहले से पका लें जिन्हें बनने में ज्यादा समय लगता है।
8. सही सामग्री के लिए सही खाना पकाने की विधि का उपयोग करें जिससे उसका स्वाद बना रहे।
9. खाना बनाने के बाद अपना सिंक और प्लेटफॉर्म जरूर साफ करें।

आज़ हम कान की चर्चा करतें हैं। कान प्रत्येक जीव के अपने शरीर के आकार के अनुपात में होते हैं

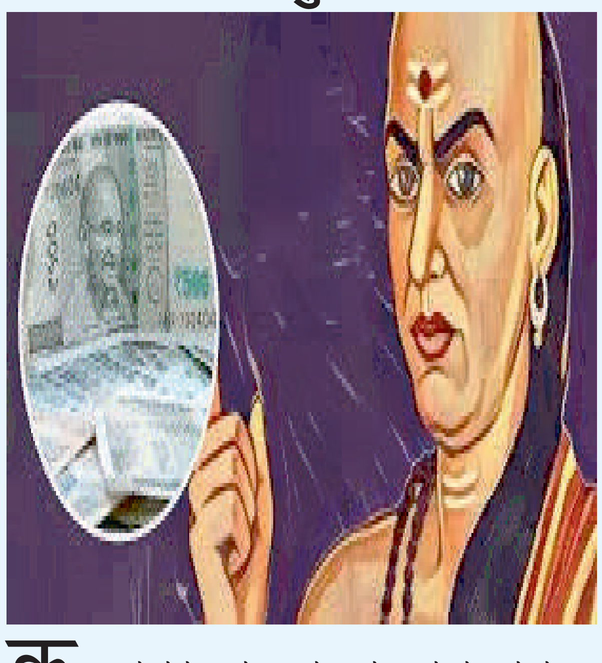

कभी हम सोचते थे कि हमें सुनाई तो कान के छिद्र में बने इंस्ट्रूमेंट के कारण ही देता है तो परमात्मा ने चेहरे पर अलग से यह दो कान जैसा खड़ा आकार क्युंकर बना दिया? आज़ देखकर लगता है कि इस उभरे हुए कान की कितनी आवश्यकता है। उपयोगिता के साथ साथ हम इस पर गजब का जुल्म भी ढहा रहें हैं। पहले पहल तो चूड़ी जितनी बड़ी-बड़ी बालियां लटका दीं। बाद में विभिन्न आकारों/डिजाइनों में मात्र एक ही नहीं, जाने कितनी बाली/बुंदें लटकाने लगे। सोचते हैं यदि कान न होते तो हम 'देखते' कैसे? क्योंकि अब तो केवल उम्रदराज ही नहीं दो-चार साल की उम्र के बच्चे भी चश्मा लगाने के लिए मजबूर हैं, तो चश्मा रखने/रोकने में बेचारा कान ही सहायक है। बात इतने पर ही खत्म नहीं हुई, मास्क पहनने/लगाने के लिए कान ही एकमात्र साधन बना। और तो और, इन सबके बोझ झेलने वाला कान, अब ईयरफोन की तार (जो सारा-सारा दिन लोग लगाते हैं) लगाने से और भी ज्यादा बोझिल हो गया। बेचारा कान, जिसे सब बिना काम का समझते थे, उसे गधे की तरह लाद दिया है। ध्यान रहे कि कान कभी भी बेकार नहीं था। यह हमारे शरीर की ऐसी आकृति को दर्शाता है जैसी वह माता के गर्भ में थी जिसमें सिर नीचे, हाथ और पैर भीतर एकसाथ जुड़े हुए थे। यदि हम चाहें तो केवल कानों की मसाज करने भर से, अपने समस्त शरीर को मसाज/स्फूर्ति/ऊर्जा दे सकतें हैं। यही एक्युप्रेशर तकनीक है। होश रहे कि कभी किसी के छोटे आकार को देखकर

पैरेंट्स ने हस्ताक्षर अभियान चलाकर निजी स्कूलों में बढ़ी फीस नहीं भरने का एलान किया- आप

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, :दिल्ली में भाजपा सरकार की मिलीभगत से निजी स्कूलों द्वारा बढ़ाई गई बेतहाशा फीस के खिलाफ पैरेंट्स का आक्रोश बढ़ता रहा है। पैरेंट्स का यह गुस्सा अब सड़कों पर दिखाई देने लगा है। शनिवार को यूनाइटेड पैरेंट्स वॉयस संगठन के बैनर तले बड़ी संख्या में पैरेंट्स सड़कों पर उतरकर हस्ताक्षर अभियान चलाया। इस दौरान पैरेंट्स ने भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और बढ़ी फीस जमा नहीं करने का एलान किया। पैरेंट्स के साथ खड़ी आम आदमी पार्टी ने हस्ताक्षर अभियान की वीडियो एक्स पर साझा करते हुए भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला। ''आप'' ने कहा कि दिल्ली में भाजपा की सरकार आने के बाद से निजी स्कूलों में दोबारा शिक्षा माफिया जिंदा हो गया है।

आम आदमी पार्टी ने कहा कि निजी स्कूलों द्वारा बढ़ाई गई फीस के खिलाफ अभिभावक सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन करने को मजबूर हैं। दिल्ली में भाजपा सरकार के आने के बाद निजी स्कूलों का माफिया दोबारा ज़िंदा हो गया और मनमाने ढंग से फीस बढ़ा दी। भाजपा सरकार भी इन शिक्षा माफियाओं के साथ ही खड़ी है। शिक्षा माफिया और भाजपा सरकार की तानाशाही से परेशान होकर अब बच्चों के अभिभावक सड़कों पर उतर रहे हैं और विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

आम आदमी पार्टी का कहना है कि जब तक दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की सरकार थी, निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के पैरेंट्स ने कभी सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन नहीं किया। क्योंकि केजरीवाल सरकार ने हमेशा पैरेंट्स के हित की सोची और निजी स्कूलों में फीस नहीं बढ़ने दी। निजी स्कूल फीस बढ़ाने की मांग को लेकर कोर्ट तक गए, लेकिन वहां से भी उन्हें मुंह की खानी पड़ी। पिछले दस सालों से दिल्ली के पैरेंट्स मन लगाकर अपने काम-धंधे कर रहे थे, उन्हें फीस वृद्धि समेत किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं हुई। वहीं, जब से दिल्ली में भाजपा की सरकार आई है, पैरेंट्स बेतहाशा फीस वृद्धि से परेशान हैं। पैरेंट्स दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता समेत अन्य जगहों पर बढ़ी फीस वापस लेने की गुहार लगाकर थक चुके हैं, लेकिन उनकी सुनने वाला कोई नहीं है। भाजपा सरकार से मिली निराशा के बाद आज पैरेंट्स अपने काम-धंधे छोड़कर सड़कों पर विरोध प्रदर्शन करने को मजबूर हैं। इसके बाद भी भाजपा की सरकार की कानों में जूं नहीं रेंग रही है।

पूर्ण सत्ता वाले पंजाब में किसान हितैषी विधायक ने पार्टी छोड़ी है अब अरविंद केजरीवाल क्या कहेंगे : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की अरविंद केजरीवाल की हठधर्मी से आम आदमी पार्टी में बिखराव दिल्ली संगठन से चल कर पंजाब तक पहुंच गया है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की किसान आंदोलन के दौरान ₹आप₹ नेताओं ने सत्ता में आते ही एम.एस.पी. सुधार एवं बढ़ा कर तुरंत लागू करने के वादे किए थे। इसी के साथ महिलाओं को सम्मान राशि, बेहतर स्कूल, अस्पताल और पूरी बिजली एवं जल आपूर्ति के वादे किए थे पर आधे से अधिक कार्यकाल पूरा होने के बाद पंजाब के ₹आप₹ विधायक जनता के प्रति जवाबदेही में खुद को असहज महसूस कर रहे हैं।

इसी असहज स्थिती के चलते ही आज पंजाब की ₹आप₹ विधायक अनमोल गगन जिन्होने पार्टी नेताओं के भरोसे ₹पांच मिनट में एम.एस.पी.₹ जैसी लोकलुभावनी घोषणा की थी ने आज जनता के प्रति साफ रहने के लिए ₹आप₹ विधायक के रूप में विधानसभा से इस्तीफा दे दिया।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की यह बिल्कुल वैसे ही स्थिती है जैसी केजरीवाल सरकार के भ्रष्टाचार के किस्से स्थापित होने के बाद 2023 से दिल्ली के विधायकों के सामने थी।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की जब दिल्ली में ₹आप₹ विधायक एवं पार्षद पार्टी छोड़ते हैं तो उनका शीर्ष नेतृत्व उसे ₹आप्रेशन लोटस ₹ बताता है पर अब तो पूर्ण सत्ता वाले पंजाब में किसान हितैषी विधायक ने पार्टी छोड़ी है अब अरविंद केजरीवाल क्या कहेंगे ?

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की जिस विकास विरोधी नकारता से केजरीवाल एवं कुछ वरिष्ठ ₹आप₹ नेता दिल्ली में सरकार विरोधी ब्यानबाज़ी कर रहे हैं वो दिन दूर नही की ₹आप₹ में फिर मतभेद हो जाये।

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं के योगदान पर राष्ट्रीय इतिहास सम्मेलन (वेबिनार) का आयोजन किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के महिला विभाग ने ₹भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं का योगदान₹ विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस राष्ट्रीय इतिहास सम्मेलन में प्रतिष्ठित सामाजिक विचारकों ने भाग लिया, जिन्होंने भारत के सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों को आकार देने में उन मुस्लिम महिलाओं के असाधारण योगदान पर चर्चा की गयी जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। वेबिनार में एकीकृत अनुसंधान, कहानी और आत्मनिरीक्षण जैसे पहलुओं को शामिल किया गया था। इस कार्यक्रम का नेतृत्व जमाअत की राष्ट्रीय सचिव रहमतुनिस्सा ए ने की। वह महिला नेतृत्व एवं सुधार की प्रमुख समर्थकों में से हैं।

वेबिनार में मुख्य सम्बोधन दक्षिणी न्यू हैम्पशायर विश्वविद्यालय और सेंट लियो विश्वविद्यालय सहित कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में भारत संकाय पर्यवेक्षक डॉ. संगीता सक्सेना ने किया। उन्होंने बिहार और बंगाल के विशाल ऐतिहासिक अभिलेखों का उपयोग करके भारत के स्वतंत्रता संग्राम, शिक्षा प्रणाली, सामाजिक सुधार, साहित्य और व्यापार में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली मुस्लिम महिलाओं की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत की। बेगम हजरत महल से लेकर ज़हरा कलीम तक, उन्होंने उन महिलाओं को रेखांकित किया, जो पाठ्यपुस्तकों से अनुपस्थित होने के बावजूद, ₹हमारे देश के इतिहास में गुमनाम नायिकाएं₹ रहीं। डॉ. तुहिना इस्लाम, सहायक प्रोफेसर, आलिया विश्वविद्यालय, कोलकाता ने अलीगढ़ महिला कॉलेज की अग्रणी वाहिद जहां बेगम के कार्य और जीवन पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी शोधपरक प्रस्तुति में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में वाहिद जहां के दूरदर्शी कार्यों और मुस्लिम महिलाओं को सुरक्षित एवं सम्मानजनक शिक्षण वातावरण प्रदान करने में उनके त्याग पर प्रकाश डाला गया। उनका योगदान आज भी उतना ही महत्वपूर्ण और सशक्त है।

दोनों वक्ताओं ने मुस्लिम महिलाओं के समक्ष उत्पन्न दोहरे बोझ सार्वजनिक चिंता का अभाव और पितृसत्तात्मक संस्कृति की बाधा को दूर करने में असमर्थता की ओर इशारा किया। उन्होंने विद्वानों और युवा पीढ़ी को घरेलू स्तर पर अपना अध्ययन शुरू करने की चुनौती दी, क्योंकि मौखिक इतिहास और अपने आसपास की महिलाओं के विस्मृत जीवन के माध्यम से वे घर पर ही अपना अध्ययन शुरू कर सकते हैं। रहमतुनिस्सा ए ने लोगों को विश्व के बदलते स्वरूप की जांच में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कार्यक्रम का समापन किया। उन्होंने जोर देकर कहा, ₹इतिहास को केवल इतिहास की कहानी न बनने दें।₹ उन्होंने वर्तमान युग में इतिहास के अध्ययन के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से ऐतिहासिक आख्यानों में हेरफेर करने के लिए बढ़ते संस्थागत प्रयासों के आलोक में।

रहमतुनिस्सा मुस्लिम महिलाओं द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की ओर ध्यान आकर्षित किया। उनहोंने कहा कि चाहे वह ज्ञात हो या अज्ञात, प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष रूप से, महिलाओं का विभिन्न पीढ़ियों में समाज में योगदान रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के बाद के काल में, भारत के इतिहास में मुस्लिम महिलाओं के उल्लेखनीय योगदान, उनकी कहानियों को सामने लाने की आवश्यकता है। उनहोंने हमारे अतीत के असली नायकों को उजागर करने और उनका दस्तावेजीकरण करने के लिए और अधिक अकादमिक शोध की आवश्यकता पर भी बल दिया।

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद महिला विभाग की सहायक सचिव सुमैय्या मरियम ने सम्मेलन का समन्वय किया, जिसमें देश भर के विद्वानों, शिक्षकों, छात्रों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद महिला विभाग की सहायक सचिव राबिया बसरी ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें भारतीय मुस्लिम महिलाओं की अक्सर अनदेखी की गई उपलब्धियों को पहचानने की आवश्यकता और उनकी आवाज को पुनर्जीवित करने के लिए जमाअत-ए-इस्लामी हिंद की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। जमाअत की महिला राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की सदस्य मीनाज़ भानू ने कार्यक्रम का संचालन किया और भारत के सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक जीवन में उनके महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया।

ऐसे समय में जब इतिहास को मिटाना एक बढ़ती हुई समस्या है, यह सम्मेलन न केवल अकादमिक दृष्टि से प्रभावशाली था, बल्कि इसमें नैतिक अनिवार्यता, उद्देश्य-संचालित प्रेरणा भी थी। यह सम्मेलन मुस्लिम महिलाओं की विरासत को आवश्यक राष्ट्र-निर्माता के रूप में मान्यता देने, उसका दस्तावेजीकरण करने और उसका स्मरण करने के लिए है। यह सम्मेलन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि एनसीईआरटी की नई पाठ्यपुस्तकों पर नए सिरे से बहस छिड़ी हुई है, जिनमें मुगल क्रूरता और मंदिर विध्वंस को उजागर किया गया है तथा एक पक्षपातपूर्ण कथा को बल दिया गया है, जिसमें मुस्लिम शासकों को भारत में बसने और विकास करने वाले शासकों के बजाय विदेशी आक्रमणकारी के रूप में चित्रित किया गया है।

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' का नया प्रोमो हुआ जारी, जानिए क्या है खास!

मुख्य संवाददाता

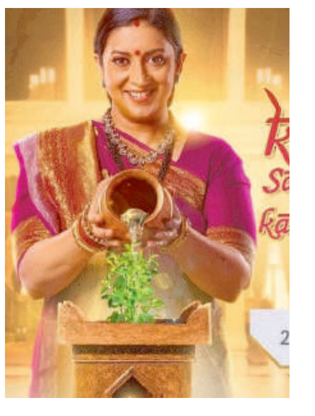

स्टार प्लस हमेशा से ही भावनाओं से जुड़ी और भारतीय संस्कृति से गहराई से जुड़ी फैमिली ड्रामा कहानियां दिखाने में आगे रहा है। इस चैनल ने हमेशा भारतीय टीवी की कहानी कहने की सीमा को आगे बढ़ाया है और अपने दर्शकों से जुड़ाव बनाए रखा है, खासकर रिश्तों, परिवार की परंपराओं और बदलते दौर के परिवारिक रिश्तों की कहानियों के जरिए। इन्हीं में से एक थी क्योंकि सास भी कभी बहू थी, जो ना सिर्फ सास-बहू शोज़ की परिभाषा बदलने वाली बनी, बल्कि करोड़ों लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा भी।

शो के नए सीजन की घोषणा ने सोशल मीडिया पर पहले ही हलचल मचा दी थी, और जैसे ही पहला प्रोमो रिलीज हुआ, दर्शकों का उत्साह और भी बढ़ गया। पुराने थीम सॉन्ग की धुन ने नॉस्टैल्जिया का असर ऐसा किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर जबरदस्त रिस्पॉन्स देखने को मिला। प्रोमो ने सिर्फ नए सीजन की झलक ही नहीं दी, बल्कि तुलसी का लुक भी सामने आया जिसमें वही गरिमा और मजबूती झलक रही थी, जिसकी वजह से वो हमेशा फैंस की फेवरेट रही हैं।

अब जब नया प्रोमो रिलीज हो चुका है, मेकर्स ने इसे शेयर करते हुए लिखा है, ₹बदलते वक्त के साथ एक नए नजरिए के साथ लौट रही है तुलसी ! क्या आप तैयार हैं उसके इस नए सफर में उसके साथ जुड़ने के लिए ? देखिए क्योंकि सास भी कभी बहू थी, 29 जुलाई से, रात 10:30 बजे, सिर्फ स्टार प्लस पर और कभी-कभी जियोहॉटस्टार पर !₹

इस नए सीजन में जहां पुराने दिनों की याद दिलाई गई है, वहीं एक नया नजरिया भी देखने को मिलेगा। प्रोमो की शुरुआत होती है तुलसी की उन यादों से, जो उसने बीते वक्त के साथ जोड़ी हैं, लेकिन साथ ही वह आगे आने वाले सफर की झलक भी दिखाती है। गोमजी की नाम वाली शर्ट से लेकर सास-बहू के रिश्तों में आए उतार-चढ़ाव तक, तुलसी बदलते वक्त और अपने मूल्यों पर कायम रहने की बात करती नजर आती है।

प्रोमो में तुलसी की मजबूती और पारिवारिक मूल्यों से उसकी गहरी जुड़ाव को खूबसूरती से दिखाया गया है, वो भी आज के बदलते दौर की चुनौतियों के बीच। कहानी पुराने जाने-पहचाने पलों से शुरू होकर नए दौर की झलकियों तक पहुंचती है, जिसमें बीते कल की यादें और आज का समय एक साथ बंधे नजर आते हैं। अंत में यह याद दिलाया जाता है कि 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' सिर्फ एक शो नहीं, बल्कि एक बार फिर से जगा हुआ जज्बात है।

साल दर साल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' सिर्फ एक टीवी सीरियल नहीं रहा, बल्कि लोगों के दिल से जुड़ गया। विरानी परिवार और उनका शांतिनिकेतन घर हर किसी को अपना सा लगने लगा और यह शो हमेशा के लिए लोगों की यादों में बस गया।

दस्तक के विद्यार्थियों को रोटरी क्लब मयूर विहार ने वितरित की स्टेशनरी

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : सामाजिक संस्था डॉ अम्बेडकर सोसायटी फार थाट्स एक्शन्स एण्ड कंसियसनेस में दसवीं कक्षा की 30 छात्राओं को रोटरी क्लब मयूर विहार ने स्टेशनरी वितरित की।

इस अवसर पर दस्तक के अध्यक्ष डॉ एन के संत ने रोटरी क्लब मयूर विहार और दस्तक के दो दशक से अधिक के जुड़ाव के लिए रोटेरियन एन के भार्गव की आभार व्यक्त किया तथा क्लब के अध्यक्ष रोटेरियन विमल अग्रवाल को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए आशा व्यक्त की कि उनके कार्यकाल में दस्तक स्वास्थ्य के क्षेत्र में और अधिक प्रोजेक्ट करेगी।

विमल अग्रवाल ने छात्राओं को लक्ष्य निर्धारित कर पढने पर बल दिया। एन के भार्गव ने कहा कि छात्राओं को नियमित पढ़ाई करने पर ही अच्छे मिल सकेंगे।

इस अवसर पर एन के भार्गव ने दान स्वरूप ₹ 60,000/- के चैक भेंट किए।

कार्यक्रम में रोटेरियन तरूण गोयल, रोटरेक्ट रिंकी चौधरी एवं दस्तक के उपाध्यक्ष विशु कोहली, प्रबंध समिति सदस्य दीपक इसरानी, कुंती देवी, रेनू संगत, सदस्य मंजू कुमारी, अध्यापिका रूपा कुमारी व उत्कर्ष यादव उपस्थित थे।

मूवी चर्चा : संत तुकाराम

भाषा विवाद के बीच मराठी संत की फिल्म नफरत, विवाद नहीं प्रेम का पाठ पढ़ाती है
रेटिंग : तीन स्टार

मुख्य संवाददाता

छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन महान संत और कवि तुकाराम के जीवन पर आधारित यह फिल्म आपकी 16 वी शताब्दी में लेकर जाती है, लंबी रिसर्च और धार्मिक विद्वानों से लंबी चर्चा के बाद बनीं यह फिल्म उस महान कवि और समाज सुधारक संत तुकाराम की जीवनी और उनके कार्यों को पूरी ईमानदारी के साथ पेश करती है, फिल्म की पूरी यूनिट फिल्म के कलाकारों ने महाराष्ट्र के छोटे से गांव में लंबा वक्त इस लिए गुजारा की फिल्म उस दौर और माहौल को जीवंत कर सके, निर्देशक आदित्य ओम और फिल्म के लीड और सहयोगी कलाकारों की मेहनत साफ दिखाई देती है, यह इत्तफाक ही है कि फिल्म की रिलीज ऐसे वक्त हुई जब महाराष्ट्र और साउथ के कुछ राज्यों में सत्ता की राजनीति करने वाले हिंदी विरोध करके अपनी राजनीति चमकाने में लगे है उन्हें इस फिल्म के मेकर से सीखना चाहिए,कि उन्होंने इस महान मराठी संत की फिल्म को हिंदी में बनाया।

फिल्म की मीडिया स्क्रीनिंग से पहले मीडिया से बात करते हुए फिल्म के युवा निर्देशक आदित्य ओम ने कहा महान संत पर फिल्म बनाना मेरे लिए गर्व का विषय है मैं चाहता हु आज की युवा पीढ़ी को हमारे इन महान संत समुदाय का ज्ञान होना चाहिए आगे भी संत कबीर, संत तुलसी दास और कबीर पर फिल्में बनाई जाए ।

स्टोरी प्लॉट

महाराष्ट्र के कोल्हापुर से कुछ दूर एक गांव में स्टार्ट टू लास्ट यहां के ग्रामीण समुदाय के साथ शूट हुई यह फिल्म तुकाराम के भक्ति आंदोलन और उनकी सामाजिक क्रांतिकारी का पूरी ईमानदारी के साथ पेश करती है , अपने छोटे बच्चों और पत्नी का मोह छोड़ कर अपने विट्ठल की भक्ति में तल्लीन हो चुके तुकाराम को घर में अपनी पत्नी के ताने और गांव में रूढ़ीवादी पंडित समुदाय के विरोध का सामना करना होता है लेकिन वह अपनी रचनाओं, अभंगों के माध्यम से समाज में व्याप्त छुआछूत, जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास और रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाने में लगे रहते है।

अभिनय , निर्देशन

मराठी सुपर स्टार सुबोध भावे का अभिनय इस फिल्म की यूएसपी है, अपने बेहतरीन अभिनय से उन्होंने तुकाराम के किरदार को पर्दे पर जीवंत किया है। भगवान विट्ठल की भूमिका में अरुण गोविल छा गए, छोटी सी भूमिका के बावजूद संजय मिश्रा प्रभावशाली रहे, तुकाराम की पत्नी के किरदार में शीना चौहान का जवाब नहीं, फिल्म के सहयोगी कलाकारों ने अपनी अपनी भूमिका को अच्छे ढंग से निभाया, निर्देशक आदित्य ओम ने स्क्रिप्ट के साथ न्याय किया है ।

ओवर ऑल

संत तुकाराम महाराज पर पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ युवा निर्देशक आदित्य की यह फिल्म उनकी ऐतिहासिक और सामाजिक भूमिका को गहराई से पेश करने के साथ साथ दिखाती है कि किस प्रकार यह महान संत महाराष्ट्र का यह संत अपने कीर्तन और भजनों के माध्यम से गांव-गांव में लोगों को जोड़ते और भक्ति के माध्यम से समाज में समानता का वातावरण निर्मित करने की मुहिम में लगे थे फिल्म को देख कर आपको लगेगा कि महाराज का व्यक्तित्व विद्रोही था, लेकिन ये विद्रोह प्रेम और करुणा से प्रेरित था। मराठी बायोपिक फिल्मों के किंग माने जाने वाले मराठी सुपर स्टार सुबोध भावे ने अपने सशक्त अभिनय से संत तुकाराम को स्क्रीन पर जीवंत कर दिखाया है, अगर आप साफ सुथरी और हमारी प्राचीन धार्मिक विरासत से जुड़ी फिल्मों को पसंद करते है और इस महान संत के बारे में विस्तार से जानना चाहते है तो अपने परिवार के साथ संत तुकाराम से मिलने अपने पास के सिनेमाघर जाए।

एक साल में 20 ईमेल... 400 से ज्यादा संस्थान, स्कूल और कॉलेजों समेत इन्हें मिली बम से उड़ाने की धमकी

पिछले एक साल से दिल्ली के स्कूल कॉलेज और अस्पतालों को बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल आ रहे हैं। पुलिस के अनुसार स्पेशल सेल ने जांच में पाया कि इन ईमेल के पीछे सवारिम नामक एक अरबी शब्द का इस्तेमाल किया गया था जो आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट से जुड़ा है। अधिकतर मामलों में ईमेल भेजने वाले नाबालिग छात्र निकले।

नई दिल्ली ।पिछले एक वर्ष से अधिक समय से स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों व हवाईअड्डों को बम से उड़ाने के धमकी भरे ईमेल पुलिस के लिए सिरदर्दी बने हुए हैं। बीते वर्ष मई माह में भेजे गए धमकी भरे ईमेल ने दिल्ली-एनसीआर के 200 स्कूलों में हड़कंप मचा दिया था।

"जहां भी वे मिलें, उन्हें मार डालो...₹ जैसे शब्दों से भरे इन ईमेल में स्कूल परिसरों में विस्फोटक होने का दावा किया गया था। एक साल में ऐसे लगभग 20 ईमेल 400 से अधिक प्रतिष्ठानों को भेजे गए, जिससे सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर आना पड़ा।

तत्काल जांच, स्कूल खाली कराना और बम डिस्पोजल दस्तों की तैनाती जैसे कदम उठाए गए, लेकिन अब तक सिर्फ कुछ मामलों में ही ठोस समाधान या ईमेल भेजने वालों को पकड़ा गया है। यह मामला आज भी जांच एजेंसियों के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

पहले इन मामलों को आतंकवाद-रोधी इकाई, स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस यूनिट को जांच का जिम्मा सौंपा गया था, लेकिन अब पुलिस आयुक्त के आदेश के बाद इन मामलों की जांच दिल्ली पुलिस की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस (आइएफएसओ) को स्थानांतरित कर दिया गया है और यूनिट इन मामलों की जांच कर ईमेल भेजने वाले की तलाश में जुटी है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस यूनिट की टीम ने जांच के दौरान धमकी भरे ईमेल की पहचान sawariim @ mail.ru के रूप में की थी। सवारिम शब्द एक अरबी शब्द है जिसका इस्तेमाल आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) वर्षों से अपने प्रचार वीडियो में अक्सर करता रहा है।

यह संबंध देश को निशाना बनाकर की जा रही एक संभावित गहरी साजिश की ओर इशारा करता है। जांच के दौरान पता चला कि जिस सेवा प्रदाता (मेल.आरयू) का इस्तेमाल बम की झूठी धमकी भेजने के लिए किया गया था, उसका मुख्यालय मास्को, रूस में था।

इंटरपोल की मदद से, पुलिस ने मास्को स्थित राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो (एनसीबी) को पत्र लिखकर धमकी भरा ईमेल भेजने वाले व्यक्ति के बारे में जानकारी मांगी। हालांकि, जांच में रुकावट आई और मामला अभी भी अनसुलझा है।

पुलिस को पता चला कि भेजने वाले ने अपनी पहचान छिपाने के लिए वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) या प्राक्सी सर्वर (इंटरनेट पर एक एनक्रिप्टेड कनेक्शन) का इस्तेमाल किया था।

कुछ मामले सुलझाए गए, पकड़े गए छात्र

पुलिस अब तक जितने भी मामले सुलझा पाई है, उनमें से अधिकतर मेल भेजने वाले नाबालिग हैं। पिछले साल दिसंबर में, दिल्ली पुलिस ने पश्चिम विहार में एक छात्र को अपने स्कूल में बम की धमकी वाला मेल भेजने के आरोप में पकड़ा था क्योंकि वह परीक्षा से बचना चाहता था।

छात्र ने यह मेल भेजने के लिए किसी वीपीएन और किसी सेवा प्रदाता द्वारा बनाई गई ईमेल आइडी का इस्तेमाल नहीं किया था, जिससे पुलिस के लिए उसे पकड़ना आसान हो गया। बच्चे की काउंसलिंग की गई और उसे छोड़ दिया गया, लेकिन इस मामले में जांच आगे नहीं बढ़ पाई।

दक्षिण जिले में भी एक मामले को सुलझाते हुए 16 वर्षीय लड़के को स्कूलों को ईमेल भेजने के आरोप में पकड़ा गया था। जांच में शामिल एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि लगभग आधा दर्जन मामलों में, छात्रों को जिम्मेदार पाया गया।

उन्होंने या तो शरारत के तौर पर या फिर अपने स्कूल बंद करने और परीक्षाओं से बचने के लिए ईमेल भेजे थे। लेकिन विदेश में बैठे शरारती तत्वों तक पुलिस नहीं पहुंच पा रही है।

क्यों नहीं पकड़े जाते आरोपित

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, जब सर्वर विदेश में स्थित होते हैं, तो हम सर्वर की जानकारी प्राप्त करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों से भी सहायता लेते हैं। पिछले कुछ महीनों में अधिकतर मामलों में, ईमेल में इस्तेमाल किए गए डोमेन यूरोपीय देशों से जुड़े पाए गए।

हालांकि, आइपी एड्रेस या मेल भेजने वाले की अन्य जानकारी तक पहुंचना लगभग असंभव है, क्योंकि वे एनक्रिप्टेड होते हैं और वीपीएस या प्रॉक्सी सर्वर का इस्तेमाल करके छिपाए जाते हैं।

सफाई कर्मचारी के पास ठेला न होने के कारण गांव में गंदगी के ढेर लग गए हैं। ग्रामीण व सफाई कर्मचारी ने कई बार ग्राम प्रधान को इस बारे में बताया है, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ

बिनावर: जनपद बदायूं के विकासखंड सलारपुर क्षेत्र की ग्राम पंचायत बिलहैत के मजरा नदौलिया में बीते लगभग तीन माह से सफाई कर्मचारी पर कूड़ा ठेली ना होने के कारण गांव की गलियां गंदगी से फटी हुई हैं और गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। इस संबंध में ग्रामीणों व सफाई कर्मचारियों ने ग्राम प्रधान से कई बार कूड़ा ठेली ना होने के संबंध में अवगत कराया।

लेकिन ग्राम प्रधान व उच्च अधिकारियों द्वारा इस और कोई ध्यान नहीं दिया गया है।

इस संबंध में सफाई कर्मचारी ने कहां की कई बार ग्राम प्रधान विनोद श्रीवास्तव से ठेली की मांग की लेकिन अभी तक ठेली नहीं मिली है जिससे उन्हें गांव में रेडी ना होने के कारण सफाई करने में काफी दिक्कतें

आ रही हैं। इस संबंध में मीडिया कर्मी ने दूरभाष के माध्यम से ग्राम पंचायत अधिकारी वर्षा पाठक से जानकारी लेना चाहा तो उन्होंने कॉल उठाना उचित नहीं समझा।

इस संबंध में एडीओ पंचायत सलारपुर शिवकुमार का कहना है कि दो-चार दिन में उक्त सफाई कर्मचारी को कूड़ा उठाने वाली ठेली की व्यवस्था कर दी जाएगी।

माँ सीता रसोई के द्वारा झूलन महोत्सव के अंतर्गत हुई साधु-संत-ब्रजवासी सेवा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ब्रह्मकुंड रोड़ स्थित ठाकुरश्री राधाकान्त मन्दिर में श्रीसीता रसोई के तत्वावधान में माँ सीता रसोई की संचालक व संकट मोचन सेना महिला प्रकोष्ठ (पंजाब प्रान्त) की प्रदेश अध्यक्ष बहिन मनप्रीत कौर की सुपुत्री कुमारी हेजल के द्वितीय जन्म दिवस के उपलक्ष्य में झूलन महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।जिसके अंतर्गत सैकड़ों संतों, विप्रों, एवं ब्रजवासियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें वस्त्र व दक्षिणा आदि भेंट दी गई।

इस अवसर पर याज्ञिक रत्न आचार्य विष्णुकांत शास्त्री व विश्वविख्यात भागवताचार्य पंडित मृदुलकांत शास्त्री ने कहा कि सेवा ही परम् धर्म है।संतों, विप्रों और ब्रजवासियों की सेवा करने से साक्षात श्रीकृष्ण की सेवा करने का फल मिलता है।इसके लिए हम बहिन मनप्रीत कौर को बहुत बहुत साधुवाद देते हैं।

माँ सीता रसोई के प्रबंधक आचार्य अंशुल पाराशर एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि मां सीता रसोई की संचालक बहिन मनप्रीत कौर की बेटी हेजल का दूसरा जन्म दिन श्रीधाम वृंदावन के अलावा अयोध्या, लुधियाना,प्रयागराज आदि स्थानों के अतिरिक्त देश के विभिन्न स्थानों पर अत्यंत धूम धाम से मनाया गया है।

प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद एवं सन्त प्रवर रामदास महाराज ने

कहा कि बहिन मनप्रीत कौर कई वर्षों से अयोध्या और वृंदावन में ₹सीता की रसोई₹ चला रही हैं। जिसके माध्यम से वे धार्मिक स्थलों पर जा-जाकर इसी तरह साधु-संतों व निर्धनों-निराश्रितों की सेवा करती हैं।उनका प्रयास रहता है कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे।

इससे पूर्व बेटी हेजल के जन्म दिन पर देशभर की तमाम सेलिब्रिटीज ने मनप्रीत कौर के पास अपनी शुभकामनाएं भेजीं।

इस अवसर पर आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, आचार्य हरिहर मुद्गल, आचार्य बुद्धिप्रकाश शास्त्री, पण्डित मुकेश मोहन शास्त्री, भजन गायक चंदन महाराज, पार्षद सुमित गौतम, गौरव शर्मा (सोनीपत), भानु भारद्वाज (गोवर्धन),डॉ. राधाकांत शर्मा, प्राचार्य ब्रजकिशोर त्रिपाठी, आचार्य अशोक शास्त्री, रासाचार्य सुमित अग्निहोत्री, भागवताचार्य अंकित कृष्ण महाराज, आचार्य सुदामा शास्त्री, अनूप एवं कान्हा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

दिल्ली परिवहन निगम में कार्य कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी जो की कंडक्टर के रूप में कार्य था

हंसराज

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम में एक संवाहक की कैंसर के कारण मृत्यु हो गई, जिसका नाम देवेंद्र कुमार डिपो -BBM टोकन नंबर -118952 था।

डीटीसी विभाग में काम करते हुए इस कर्मचारी को ESIC का इलाज पूरा नही मिला और प्राइवेट हॉस्पिटल में रेफर करने से मना कर दिया गया क्योंकि उस प्राइवेट हॉस्पिटल में कैंसर का इलाज 82 लाख रुपए का हो रहा था,

डीटीसी विभाग द्वारा तो ESIC के पैसे हर महीने कर्मचारी की सैलरी में से काट लिए जाते है पर ESIC विभाग कॉन्ट्रैक्ट के ड्राईवर और कंडक्टर व उन पर आश्रित परिवारों को इलाज नही मिल रहा है इस तरह से हजारों कर्मचारी मेडिकल सुविधा न मिलने से

परेशान हैं

कर्मचारी के मरने के बाद बच्चों का पीछे यह हाल हो जाता है क्योंकि दिल्ली सरकार व विभाग अपने कर्मचारी की कोई आर्थिक मदद नही करता है पर डीटीसी विभाग में कार्यरत ड्राइवर और कंडक्टर का भाई चारा जिस से जो सहयोग होता है वो जरूर करते हैं, जल्द से जल्द डीटीसी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की मेडिकल सुविधा चालू करवाई जाए।

फन वे लर्निंग एनजीओ में होम्योपैथिक डॉक्टर दीपांशु ने काफ़ी लोगों को फ्री दवाइयाँ दीं और लंगर भी बाँटा

गोपाल सिंह चाहर बने अंतरराष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत के उत्तर प्रदेश प्रदेश महामंत्री

स्थापना दिवस समारोह में हुई घोषणा, पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा रहे मुख्य अतिथि

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ, संजय साग़र सिंह। अंतरराष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत के पंचम स्थापना दिवस एवं धर्म योद्धा सम्मान समारोह के अवसर पर लखनऊ स्थित राजाजीपुरम में आयोजित भव्य कार्यक्रम में गोपाल सिंह चाहर को उत्तर प्रदेश का प्रदेश महामंत्री नियुक्त किया गया। यह घोषणा राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील शुक्ला एवं प्रदेश अध्यक्ष सुमित कटिहार के परामर्श से की गई।

समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा ने श्री चाहर की नियुक्ति की औपचारिक घोषणा की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ₹अंतरराष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत₹ ने अपने पाँच वर्षों की यात्रा में सामाजिक कुरीतियों से लड़ते हुए उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और मध्यप्रदेश सहित विभिन्न राज्यों में संगठन का प्रभावशाली विस्तार किया है। उन्होंने श्री चाहर को संगठनात्मक संरचना के अनुसार जिम्मेदारी सौंपे जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।

गोपाल सिंह चाहर हिंदुत्व विचारधारा के प्रखर प्रवक्ता के रूप में विगत कई दशकों से सक्रिय हैं। वे बजरंग दल, हिंदू जागरण मंच, शिवसेना, विशेष हिंदू महासंघ एवं धर्म जागरण मंच जैसे संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं और जमीनी स्तर पर हिंदू समाज के संगठन व जागरूकता के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाते आए हैं।

समारोह में अनेक विशिष्ट अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। इनमें अनिल शुक्ला, अर्पित शुक्ला, राजू ठाकुर, विजय शर्मा, सतीश मिश्रा, अर्जुन ग्रिज, हर्ष कटिहार, नितिन गोस्वामी, दिनेश कुशवाह, रवि व्यास, प्रदीप चौधरी, अजीत यादव एवं रामकुमार सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल रहे। सभी ने श्री चाहर को बधाई देते हुए संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मिलकर कार्य करने का संकल्प दोहराया।

इस अवसर पर धर्म योद्धा सम्मान से कई समाजसेवियों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मानित भी किया गया। समारोह का संचालन प्रेरणादायक वातावरण में सम्पन्न हुआ, जहां राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक गौरव की भावना मुखर रूप से देखने को मिली।

बदायूं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बिसौली नगर में फर्जी तरीके से संचालित पैथोलॉजी लैबों पर की छापेमारी

छापेमारी के दौरान फर्जी तरीके से संचालित हो रहे पैथोलॉजी लैब सेंटरों पर मचा हड़कंप

चिकित्सा अधीक्षक बिसौली की मौजूदगी में बदायूं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने आज बिसौली नगर में फर्जी तरीके से संचालित पैथोलॉजी लैबों पर कार्यवाही भी की छापेमारी के दौरान कई फर्जी पैथोलॉजी लैब संचालक पैथोलॉजी लैब सेंटर का शटर डाल कर भाग खड़े हुए।

शांत और परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र

स्वयं को माचिस की तीली बनाने की बजाय, शांत सरोवर बनाएं जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए

क्रोध व उत्तेजित स्वभाव,अपराध बोध प्रवृत्ति का मुख्य प्रवेश द्वार - अपराध मुक्त भारत के लिए मनीषियों को क्रोध त्यागना प्राथमिक उपाय - **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

भारतीय संस्कृति, सभ्यता के बारे में हमने साहित्य और इतिहास के माध्यम से और भारत माता की गोद में रहकर पारिवारिक संस्कृति, मान सम्मान, रीति- रिवाजों से इसे प्रत्यक्ष महसूस भी कर रहे हैं। परंतु हमारे बड़े बुजुर्गों के माध्यम से हमने कई बार सतयुग का नाम सुने हैं, जिसका वर्णन वे स्वर्गलोक़ के तुल्य करते हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हुं कि इतनी सुखशांति, अपराध मुक्ति, इमानदारी, शांति सरोवर तुल्य,कोई चालाकी चतुराई गलतफहमी या कुटिलता या भ्रष्टाचार नहीं, बस एक ऐसा युग कि कोई अगर कुछ दिन, माह के लिए बाहर गांव जाए तो अपने घरों को ताला तक लगाने की ज़रूरत नहीं !अब कल्पना कीजिए कि अपराध बोध मुक्त युग !मेरा मानना है कि हमारी पूर्व की पीढ़ियों ने ऐसा युग जिए होंगे तब यह बोध आगे की पीढ़ियों में आया,जिसे सतयुग के नाम से जरूर जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान युग पर बड़े बुजुर्गों में चर्चा की करें तो इस इसे कलयुग नाम देते हैं, याने सभी प्रकार के अपराध बोध से युक्त संसार। हर तरह की बेईमानी, भ्रष्टाचार कुटिलता से भरा हुआ युग !आज भी बुजुर्गों का मानना है कि वह सतयुग फिर आएगा,याने आज की तकनीकी भाषा में अपराध मुक्त, भ्रष्टाचार बेईमानी कुटिलता मुक्त पारदर्शिता और अनेकता में एकता वाले भारत की परिकल्पना का युग।

साथियों बात अगर हम अपराध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, कुटिलता से भरे जग की करें तो मेरा मानना है कि इसका मुख्य प्रवेश द्वार क्रोध, उत्तेजित स्वभाव व लालच है जिसमें आपराधिक बोध प्रवृत्ति का जन्म होता है और व्यक्ति क्रोध में हिंसा, अपराध, लालच, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कुटिलता के अमानवीय कृति और अन्य गलत कार्यों की ओर मुड़ जाता है और आगे बढ़ते ही चले जाता है जब जीवन के असली महत्व का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध की अभिव्यक्ति हमारे अंदर की कुंठा, हिंसा व द्वेष के कारण भी हो सकती है। वर्तमान काल में अपराधों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण भीषण क्रोध ही है। क्रोध से उत्पन्न हुए अपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है। एक दोष को दूर करने के लिए अनेक कुतर्क पेश करता है। क्रोध में व्यक्ति आपा खो देता है। क्रोध में अंततः बुद्धि निस्तेज हो जाती है और विवेक नष्ट हो जाता है। क्रोध का विकराल रूप जुनून है। आदमी पर जुनून सवार होने पर वह जघन्य से जघन्य अपराध कर बैठता है। जुनून की हालत में उसे मानवीय गुणों का न बोध रह पाता है और न ही ज्ञान। क्रोध मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, बहुत बड़ा अभिशाप है।

साथियों बात अगर हम शांत, परोपकारी स्वभाव ही जीवन का मूल मंत्र की करें तोअभिभावकों, शिक्षकों को बच्चों को यह शिक्षा देना है और हम बड़ों को यह स्वतः संज्ञान लेना है कि माचिस की तीली बनने की बजाय शांत सरोवर बनना होगा, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए, बस ! यह भाव अगर हम मनीषियों के हृदय में समाहित हो जाए तो यह विश्व फिर सतयुग का रूप धारण करेगा जहां किसी तरह का कोई अपराध बोध या गलत काम का भाव नहीं होगा। सभी मनीषी जीव परोपकारी भाव से युक्त होंगे भाईचारा, प्रेम, सद्भाव की बारिश होगी जहां बिना ताले घरबार छोड़ कहीं भी जाने के भाव जागृत होंगे और हमारे बुजुर्गों का सतयुग रूपी सपना साकार होगा।

साथियों बात अगर हम स्वयं को माचिस की तीली याने क्रोधित होने पर विपरीत परिणामों की करें तो, क्रोध मनुष्य को बर्बाद कर देता है और उसे अच्छे बुरे का पता नही चलने देता, जिस कारण

मनुष्य का इससे नुक्सान होता है। क्रोध मनुष्य का प्रथम शत्रु होता है। क्रोधी व्यक्ति आवेश में दूसरे का इतना बुरा नहीं जितना स्वयं का करता है। क्रोध व्यक्ति की बुद्धि को समाप्त करके मन को काला बना देता है।

साथियों बात अगर हम क्रोध को नियंत्रित कर समाप्त करने की तकनीकी की करें तोइलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार क्रोध के नकारात्मक प्रभाव पूरे इतिहास में देखे गए हैं। प्राचीन दार्शनिकों, धर्मपरायण व्यक्तियों और आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतीत होने वाले अनियंत्रित क्रोध का मुकाबला करने की सलाह दी गई है। आधुनिक समय में, क्रोध को नियंत्रित करने की अवधारणा को मनोवैज्ञानिकों के शोध के आधार पर क्रोध प्रबंधन कार्यक्रमों में अनुवादित किया गया है।क्रोध प्रबंधन क्रोध की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक मनो-चिकित्सीय कार्यक्रम है। इसे क्रोध को सफलतापूर्वक तैनात करने के रूप में वर्णित किया गया है। क्रोध अक्सर हताशा का परिणाम होता है, या किसी ऐसी चीज से अवरुद्ध या विफल होने का अनुभव होता है जिसे विषय महत्वपूर्ण लगता है। अपनी भावनाओं को समझना क्रोध से निपटने का तरीका सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जिन बच्चों ने अपनी नकारात्मक भावनाओं को क्रोध डायरी में लिखा था, उन्होंने वास्तव में अपनी भावनात्मक समझ में सुधार किया, जिससे बदले में कम आक्रामकता हुई। जब अपनी भावनाओं से निपटने की बात आती है, तो बच्चे ऐसे उदाहरणों के प्रत्यक्ष उदाहरण देखकर सबसे अच्छा सीखने की क्षमता दिखाते हैं, जिनके कारण कुछ निश्चित स्तर पर गुस्सा आया। उनके क्रोधित होने के कारणों को देखकर, वे भविष्य में उन कार्यों से बचने की कोशिश कर सकते हैं या उस भावना के लिए तैयार हो सकते हैं जो वे अनुभव करते हैं यदि वे खुद को कुछ ऐसा करते हुए पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर उन्हें गुस्सा आता है, इसके साथ ही एकांत में जाकर ध्यान के माध्यम से क्रोध के विकारों को नष्ट करने का प्रयास करें तो ऋणात्मक ऊर्जा को मोड़कर हम सकारात्मक ऊर्जा से विवेक सम्मत निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि शांत, परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र है !स्वयं को माचिस की तीली बनने की बजाए शांति सरोवर बनाएं, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए। क्रोध, उत्तेजित स्वभाव, अपराधिक बोध प्रवृत्ति का मुख्य प्रवेशद्वार है अपराध मुक्त भारत के लिए मनीषियों को क्रोध त्यागना प्राथमिक उपाय है।

महिंद्रा की ये दमदार एसयूवी ऑस्ट्रेलिया में हुई लॉन्च, पावरफुल इंजन और शानदार फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर एसयूवी Mahindra XUV 3XO को ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च किया है। यह ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली कंपनी की चौथी गाड़ी है। XUV 3XO में 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन दिया गया है जो 110 hp की पावर जनरेट करता है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और ADAS जैसे फीचर्स हैं। साथ ही और भी कई बेहतरीन फीचर्स से लैस है।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर SUV Mahindra XUV 3XO को अब ऑस्ट्रेलिया में भी लॉन्च कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली यह कंपनी की चौथी गाड़ी है। इससे पहले Mahindra Scorpio, XUV700 और S11 4X4 Pikup लॉन्च किया जा चुका है, जिन्हें काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। आइए XUV 3XO के बारे में विस्तार में जानते हैं कि इसे ऑस्ट्रेलिया में किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

Mahindra XUV 3XO के ऑस्ट्रेलियन वैरिएंट्स और कीमतें

AX5L : AUD 23,490 (लगभग 13.18 लाख रुपये)

AX7L : AUD 26,490 (लगभग 14.87 लाख रुपये)

ये कीमतें ड्राइव-अवे प्राइस हैं, जिसमें टैक्स, रजिस्ट्रेशन और सभी ऑन-रोड खर्च शामिल हैं। यह इंट्रोडक्टरी ऑफर 31 अगस्त 2025 तक वैध है। सितंबर से कीमत में AUD 500 की बढ़ोतरी होगी।

XUV 3XO का डिजाइन

डिजाइन के मामले में Mahindra XUV 3XO का एक्सटीरियर भारतीय वर्जन जैसा ही है। इसमें C-शेप LED DRLs, बोल्ड फ्रंट ग्रिल, इनोवेटिव Infinity टेललैंप्स, AX5L में 16-इंच डायमंड कट अलॉय व्हील्स, AX7L में 17-इंच बड़े अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसे ऑस्ट्रेलिया में Everest White, Galaxy Grey, Stealth Black और Tango Red के साथ लॉन्च किया गया है, लेकिन AX7L में Citrine Yellow एक्सक्लूसिव कलर के साथ पेश किया गया है।

XUV 3XO का इंटीरियर्स

यह एक फुल-लोडेड स्मार्ट SUV है। इसके पीछे की वजह इसमें मिलने वाले फीचर्स है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन और डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस Android Auto और Apple CarPlay, ड्यूल जोन क्लाइमेट कंट्रोल, लेदर रैप्ड स्टीयरिंग और गियर नॉब, इलेक्ट्रिक फोल्डिंग ORVMs जैसे फीचर्स दिए गए हैं। वहीं, AX7L वेरिएंट को स्काईरूफ, Harman Kardon प्रीमियम साउंड सिस्टम, ब्लैक लेदरेट सीट्स और सॉफ्ट टच डैशबोर्ड, 360 डिग्री कैमरा और ब्लाइंड व्यू मॉनिटर और ADAS सिस्टम के ऑटो इमरजेंसी ब्रेकिंग, फॉरवर्ड कोलिजन अलर्ट, ट्रैफिक साइन रिकग्निशन जैसे फीचर्स से लैस किया गया है।

XUV 3XO का इंजन

ऑस्ट्रेलिया में Mahindra XUV 3XO को सिर्फ 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया गया है। यह इंजन 110 hp की पावर और 200 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को साथ में 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। XUV 3XO का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया में Chery Tiggo 4, Mazda CX-3, MG ZS, Kia Stonic और Hyundai Venue जैसी कॉम्पैक्ट SUVs से होगा।

टाटा हैरियर ईवी ने मचाया धमाल, सिर्फ 24 घंटे में हुई 10,000 से ज्यादा बुकिंग

टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया जिसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई। इस इलेक्ट्रिक कार को 24 घंटे में 10000 से ज्यादा बुकिंग मिलीं। Harrier EV दो बैटरी विकल्पों के साथ आती है जो 65 kWh और 75 kWh है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें कई एडवांस सेफ्टी फीचर्स भी मिलते हैं।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया है। इसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई थी। टाटा की इस इलेक्ट्रिक कार की महज 24 घंटे में 10,000 से ऊपर पहुंच गई। इस सेगमेंट में यह दूसरी सबसे बड़ी बुकिंग रिकॉर्ड है। इससे पहले इसी साल फरवरी में Mahindra XEV 9e को लॉन्च के दिन 16,900 बुकिंग्स मिली थीं। इसकी बुकिंग के बाद डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू हो जाएगी। आइए जानते हैं कि हैरियर ईवी को किन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है?

Harrier EV के स्पेसिफिकेशन्स

हैरियर ईवी को दो बैटरी ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जो 65 kWh और 75 kWh है। इसका 65 kWh बैटरी पैक फुल चार्ज होने के बाद MIDC रेंज 538 किमी है। इसके 75 kWh बैटरी पैक के MIDC रेंज 627 किमी है। Harrier EV का टॉप वैरिएंट QWD में आता है, जिसमें बड़ा 75 kWh बैटरी पैक इस्तेमाल किया गया है।

इसके RWD वैरिएंट्स में 238 PS की पावर और 315 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका QWD ड्यूल मोटर वैरिएंट में फ्रंट मोटर से 158 PS और रियर मोटर से 238 PS की पावर के साथ ही 504 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। RWD में Eco, City और Sport ड्राइव मोड्स, जबकि QWD में बाकि मोड्स के साथ ही एक Boost मोड भी मिलता है।

Harrier EV के फीचर्स

Tata Harrier EV में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें ड्यूल टोन इंटीरियर दिया गया है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, 36.9 सेमी QLED इंफोटेनमेंट सिस्टम, ड्यूल जोन टेंपरेचर मोड्स, एंबिएंट लाइट्स, ऑटो पार्क सिस्टम, की-लैस एंट्री, फोन एक्सेस एंट्री, 540 डिग्री सराउंड व्यू सिस्टम, E-iRVM, जेबीएल ऑडियो सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, कार प्ले, छह टैरेन मोड्स नॉर्मल, मड, रॉक क्रॉल, सैंड, स्नो/ग्रास और कस्टम मोड्स, 22 सेफ्टी फीचर्स के साथ Level-2 ADAS, OTA, इन कार पेमेंट, रेंज पॉलिगॉन, OTA अपडेट, V2L, V2V, Arcade में 25 से ज्यादा एप, चार साल कनेक्टिड कार फीचर्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पावर बॉस मोड, फ्रंट पावर्ड सीट्स, 502 से 999 लीटर बूट स्पेस जैसे कई बेहतरीन सुविधाएं दी गई हैं।

Harrier EV की कीमत

भारतीय बाजार में Tata Harrier EV को 21.49 लाख रुपये से लेकर 30.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच ऑफर किया जाता है।

क्या फ्लॉप हो रही है एलोन मस्क की टेस्ला साइबरट्रक? जानिए क्या है पीछे का कारण

टेस्ला साइबरट्रक जिसका प्रचार Elon Musk ने खूब किया उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। इसकी बिक्री में भारी गिरावट आई है दूसरी तिमाही में 52% तक की कमी देखी गई। ऊंची कीमत विवादास्पद डिज़ाइन और कम रेंज के कारण यह आम खरीदारों के लिए मुश्किल है। Tesla को अब Rivian Ford और GM जैसी कंपनियों से कड़ी चुनौती मिल रही है जिससे निवेशकों का भरोसा डगमगा सकता है।

नई दिल्ली। दुनिया की सबसे पॉपुलर इलेक्ट्रिक कारों में से एक Tesla Cybertruck है। टेस्ला कंपनी के मालिक Elon Musk ने इसका बढ़ चढ़कर प्रचार किया। इसके साथ ही इसकी खूबियों के बारे में काफी प्रचार किया। जिस तरह से साइबरट्रक का प्रचार किया गया था, उस तरह से यह खरी नहीं उतरी है। जब Elon Musk ने पहली बार Cybertruck को पेश किया था, तो उन्होंने इसे एक फ्यूचरिस्टिक की कार बताया था। सीएनएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, Cybertruck ने ना केवल Tesla के वादों को पूरा करने में असफलता पाई, बल्कि कंपनी की प्रतिष्ठा को भी झटका दिया है। आइए जानते हैं कि आखिर किस तरह से Cybertruck उस तरह से परफॉर्म नहीं कर पाई, जिस तरह से कंपनी चाहती थी?

Tesla Cybertruck की बिक्री में गिरावट

Tesla आमतौर पर अपने मॉडल्स की बिक्री के आंकड़े सार्वजनिक रूप से नहीं बताती है, लेकिन कंपनी के जरिए जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, दूसरी तिमाही (अप्रैल-जून 2025) में Tesla की कुल ग्लोबल डिलीवरी में 13.5% की गिरावट आई है, जो अब तक की सबसे बड़ी तिमाही गिरावट मानी जा रही है।

Cybertruck की बिक्री को Tesla की दूसरे मॉडल्स की कैटेगरी में छिपा देती है, जिससे Model S, Model X, और Cybertruck शामिल होते हैं। इस कैटेगरी की बिक्री 21,500 से घटकर सिर्फ 10,400 यूनिट रह गई है, यानी करीब 52% की गिरावट, जो सीधे तौर पर एक क्लियर फेलियर को दिखाता है।

Cybertruck के फ्लॉप होने के पीछे के कारण

Cybertruck की कीमत लगभग $80,000 से $100,000 (68.40 लाख से 85.50 लाख रुपये) के बीच है, जो इसे आम खरीदारों की पहुंच से बाहर कर देती है। जल्द ही कई बाजारों में इलेक्ट्रिक व्हीकल्स पर मिलने वाले टैक्स बेनेफिट्स खत्म हो सकते हैं, जिससे इसकी लागत और भी बढ़ जाएगी। इसका डिजाइन काफी अनोखा है, जिसकी वजह से इसके डिजाइन को काफी आलोचना मिली है और आम उपभोक्ता इसे प्रैक्टिकल नहीं मानते है। Elon Musk ने शुरुआत में 500 मील की रेंज का दावा किया गया है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल लगभग 200 मील ही दे पा रही है। Cybertruck को कई बार वापस बुलाया गया, जिनमें एक मामला ऐसा भी था जहां चलते ट्रक से स्टील पैनल गिर गया।

क्या Cybertruck Tesla को डुबो देगा?

Tesla की बाकी कारें जैसे Model 3 और Model Y अभी भी बाजार में अच्छा कर रही हैं, लेकिन उनकी तरह Cybertruck की बिक्री नहीं हो रही है। Tesla को अब Rivian, Ford, और GM जैसी कार निर्माता कंपनियों से भी कड़ी चुनौती मिल रही है। इसके साथ ही चीन की कंपनी BYD तेजी से Tesla से आगे निकल रही है। भले ही Tesla के स्टॉक्स लंबे समय में अच्छा प्रदर्शन करते रहे हों, लेकिन अगर प्रोडक्ट्स की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में गिरावट जारी रही, तो निवेशकों का भरोसा भी डगमगा सकता है।

भारत में जल्द लॉन्च होगा एकदम नया वीएलएफ मोबसटर स्कूटर, शानदार डिजाइन और बेहतरीन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

Motohaus India ने VLF Mobster स्कूटर को भारत में लॉन्च करने की घोषणा की है। यह स्कूटर ICE के साथ आने वाला VLF का पहला स्कूटर होगा। इसमें दमदार डिजाइन और कई शानदार फीचर्स मिलेंगे। इसमें डिस्क ब्रेक डिजिटल TFT डिस्प्ले USB चार्जिंग पोर्ट जैसे फीचर्स होंगे। इंजन के बारे में अभी जानकारी नहीं दी गई है लेकिन यह 125cc या 180cc इंजन के साथ आ सकता है।

नई दिल्ली। Motohaus India ने आधिकारिक तौर पर घोषणा कर दी है कि VLF Mobster स्कूटर भारत में लॉन्च होगा। Mobster, VLF का भारत में पहला ICE (इंटरनल कम्बशन इंजन) स्कूटर होगा। इसे कई बेहतरीन फीचर्स और डिजाइन के साथ भारत में लॉन्च किया जाएगा। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं।

डिजाइन होगा दमदार

VLF Mobster का लुक बाकी स्कूटरों से अलग और बेहद आक्रामक है। फ्रंट एप्रन पर ट्विन-हेडलैंप सेटअप इसे एक स्पोर्टी और मस्कुलर लुक देता है, जो भारतीय बाजार में किसी और स्कूटर में देखने को नहीं मिलता। सिंगल-पीस सीट और साइड पैनल का खास डिजाइन इसकी स्टाइल को और उभारता है। चौड़ा, स्ट्रीट बाइक स्टाइल हैंडलबार भी इस स्कूटर को बाकी स्कूटर्स से अलग खड़ा करता है। यह डिज़ाइन एलीमेंट्स इसे युवा राइडर्स के लिए और आकर्षक बनाते हैं।

फीचर्स मिलेंगे काफी शानदार

VLF Mobster को कंपनी ने प्रीमियम सेगमेंट में उतारने की तैयारी की है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स शामिल हैं। इसमें डिस्क ब्रेक सेटअप, टेलीस्कोपिक फ्रंट फोर्क्स और रियर डुअल शॉक एब्जॉर्बर, फ्रंट में 120-सेक्शन और रियर में 130-सेक्शन टायर्स के साथ 12-इंच अलॉय व्हील्स, 5-इंच का पूरी तरह डिजिटल TFT कलर डिस्प्ले, जिसमें मोबाइल स्क्रीन मिररिंग की सुविधा मिलेगी, USB चार्जिंग पोर्ट, स्विचेबल डुअल-चैनल ABS, लाइव डैशकैम फीचर, जो भारतीय सड़कों के हिसाब से काफी उपयोगी साबित हो सकता है

इंजन और परफॉर्मेंस

VLF Mobster में कौन सा इंजन मिलेगा, इस पर अभी कंपनी ने पूरी तरह से पर्दा नहीं उठाया है। कंपनी दो ऑप्शन्स पर विचार कर रही है। इसे 125cc इंजन के साथ पेश किया जा सकता है, जो 12 bhp की पावर और 11.7 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसमें 180cc इंजन के साथ भी पेश किया जा सकता है जो ज्यादा दमदार 18 bhp की पावर और 15.7 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे स्कूटर ग्रे, व्हाइट, रेड और यलो जैसे कलर ऑप्शन्स में लाया जा सकता है।

VinFast VF6 और VF7 की बुकिंग 15 जुलाई से शुरू, भारत में 32 डीलरशिप के साथ करेगी एंट्री

वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता VinFast भारतीय बाजार में प्रवेश करने जा रही है। कंपनी 15 जुलाई 2025 से VF6 और VF7 इलेक्ट्रिक SUVs की प्री-बुकिंग शुरू करेगी। VinFast की शुरुआत 32 डीलरशिप के साथ होगी जो 27 शहरों में फैली होंगी। कंपनी Global Assure के साथ 24x7 रोडसाइड असिस्टेंस और BatX Energies के साथ बैटरी रीसाइक्लिंग पर भी काम करेगी। VF6 Hyundai Creta Electric को टक्कर देगी।

नई दिल्ली। वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी VinFast अब भारतीय बाजार में अपने कमद जामने जा रही है। कंपनी की तरफ से धोषणा की गई है कि 15 जुलाई 2025 से VinFast VF6 और VF7 इलेक्ट्रिक SUVs की प्री-बुकिंग शुरू की जाएगी। इन दो गाड़ियों की प्री-बुकिंग शुरू करने के साथ ही भारत में एंट्री करेगी। कंपनी की शुरुआत 32 डीलरशिप के मजबूत नेटवर्क के साथ होने जा रही है।

भारत में VinFast का डीलर नेटवर्क

VinFast की पहली डीलरशिप देश के 27 बड़े शहरों में खोली जाएंगी, जिनमें दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे, जयपुर, अहमदाबाद, कोलकाता, कोचीन, भुवनेश्वर, तिरुवनंतपुरम, चंडीगढ़, लखनऊ, कोयंबटूर, सूरत, कालीकट, विशाखापट्टनम, विजयवाड़ा, शिमला, आगरा, झाँसी, ग्वालियर, वापी, बड़ौदा और गोवा शामिल हैं। कंपनी का लक्ष्य 2025 के अंत तक अपनी डीलरशिप को 35 तक बढ़ाना है।

VinFast भारत में सिर्फ गाड़ियां बेचने तक सीमित नहीं रहना चाहती। कंपनी Global Assure के साथ मिलकर 24x7 रोडसाइड असिस्टेंस, कॉल सेंटर सपोर्ट और मोबाइल सर्विस उपलब्ध कराएगी। वहीं, myTVS और RoadGrid के साथ साझेदारी कर पैन-इंडिया EV चार्जिंग नेटवर्क और सर्विस सपोर्ट को मजबूत किया जा रहा है। बैटरी के रीसाइक्लिंग और रीपर्पजिंग के लिए कंपनी BatX Energies के साथ भी काम करेगी।

कैसी हैं VinFast VF6 और VF7

भारत में VinFast VF6 और VF7 का असेंबली काम तमिलनाडु के तूतीकोरिन में बनने वाले नए प्लांट में होगा। दोनों मॉडल Vietnam से CKD यूनिट्स के रूप में आएंगे और भारत में असेंबल किए जाएंगे। VF6 को कंपनी ज्यादा मास मार्केट सेगमेंट के लिए उतारेगी, जो Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV और Mahindra BE 6 जैसी गाड़ियों को टक्कर देगी। दूसरी ओर, VF7 थोड़ा प्रीमियम सेगमेंट में रहेगा और Mahindra XEV 9e और BYD Atto 3 जैसे मॉडल्स से मुकाबला करेगा।

मेड इन इंडिया मारुति सुजुकी ई विटारा जापान में हुई पेश

भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी अब इलेक्ट्रिक वाहनों में कदम रख रही है। मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक SUV eVitara भारत में बन रही है और इसे पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट किया जाएगा। कंपनी ने इसे जापान में पेश किया है। यह eVX Concept पर आधारित है जिसका डिजाइन आकर्षक है। यह इलेक्ट्रिक कार गुजरात में बनेगी और भारत से दूसरे देशों को भेजी जाएगी।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki अब कंपनी इलेक्ट्रिक वाहनों की दुनियां में कदम रखने जा रही है। Maruti Suzuki की पहली इलेक्ट्रिक SUV, eVitara को पूरी तरह से भारत में बनाया जा रहा है और इसे पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट किया जाएगा। इसके साथ ही कंपनी ने देश के कई शोरूम में इसे शोकेस भी करना शुरू कर दिया है। इसे अब जापान में पेश किया गया है। आइए जानते हैं कि भारत में तैयार की गई और उसके बाद जापान में पेश हुई Maruti Suzuki eVitara में क्या कुछ दिया गया है?

जापान में Maruti Suzuki eVitara हुई पेश

हाल ही में Maruti Suzuki eVitara को जापान के हमामात्सु स्टेशन के शिंकानसेन टिकट गेट पर पेश किया गया है। Suzuki जापान ने अपने आधिकारिक X अकाउंट पर इसकी फोटो को शेयर किया गया है। eVitara असल में eVX Concept पर बेस्ड इलेक्ट्रिक SUV है, जो कई बड़े इंटरनेशनल मार्केट्स में लॉन्च की जाएगी। eVitara का डिजाइन काफी स्टाइलिश और मॉडर्न है। इसका लुक इसे बाकी इलेक्ट्रिक SUVs से अलग बनाता है।

भारत से दूसरे देशों की जाएगी एक्सपोर्ट

Maruti Suzuki की यह पहली इलेक्ट्रिक कार पूरी तरह भारत के गुजरात प्लांट में बनेगी। यहीं से इसे भारत के पोर्ट्स के जरिए दुनिया भर में भेजा जाएगा। इससे भारत की मैन्युफैक्चरिंग और इकोनॉमी को बड़ा फायदा मिलेगा। Suzuki और Toyota की साझेदारी के तहत इसी eVitara पर आधारित एक और मॉडल Urban Cruiser EV भी बनाया जाएगा, जो Maruti Suzuki के गुजरात प्लांट में ही बनेगा।

Maruti Suzuki eVitara के फीचर्स

Maruti Suzuki eVitara की लंबाई 4,275 mm, चौड़ाई 1,800 mm और ऊंचाई 1,640 mm है। इसका व्हीलबेस 2,700 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 180 mm है। eVitara दो बैटरी ऑप्शन्स के साथ आएगी, जो 49 kWh और 61 kWh है। इसका 49 kWh बैटरी वाला वेरिएंट 142 bhp पावर और 192.5 Nm टॉर्क जनरेट करेगा, जबकि 61 kWh बैटरी वाला वेरिएंट 172 bhp की पावर जनरेट करेगा। All-Wheel Drive (AWD) वेरिएंट में ड्यूल मोटर सेटअप मिलेगा, जो कुल 184 bhp और 300 Nm टॉर्क जनरेट करेगा।

आज बच्चों के लिए लाभकारी है वैदिक गणित

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

जब गणित की बात आती है, तो बहुत सारे बच्चे संघर्ष करते हैं, क्योंकि इसे एक मुश्किल विषय के रूप में जाना जाता है। शिक्षण के नियमित तरीकों के अलावा, वैदिक गणित के रूप में जाना जाने वाला गणित की पारंपरिक भारतीय प्रणाली, बच्चों की गणित की चिंता को कम करने वाले त्वरित तरीके और सरल सूत्र प्रदान करती है। हालांकि, वैदिक गणित कैसे काम करता है, और इसके पेशेवरों और विपक्षों क्या हैं? हम करीब से देखते हैं ...

वैदिक गणित नामक प्राचीन गणितीय प्रणाली, गति के साथ जटिल समस्याओं को हल करने के लिए आसान तरीके प्रस्तुत करती है। यह प्रणाली 16 मौलिक ₹सूत्र₹ के माध्यम से संचालित होती है, साथ ही 13 माध्यमिक सूत्रों के साथ, जो अंकगणितीय और बीजीय समस्याओं के साथ-साथ ज्यामितीय और पथरी अनुप्रयोगों को संबोधित करती है। 18 वीं शताब्दी के गणितज्ञ, स्वामी भारती कृष्ण तीर्थजी ने प्राचीन भारतीय वैदिक शास्त्रों को 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में व्यवस्थित किया, ताकि उन्हें आधुनिक स्कूल शिक्षण के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।

वैदिक गणित के प्राथमिक लक्ष्य का उद्देश्य गणना समय को कम करना है, जबकि संस्मरण की आवश्यकता को समाप्त करना है। बच्चे अधिकांश गणितीय समस्याओं को बिना लिखे हल कर सकते हैं, और न्यूनतम चरणों में मानसिक गणना के माध्यम से समाधान के साथ आ सकते हैं। वैदिक गणित कैसे काम करता है

वैदिक गणित की मुख्य अवधारणा में ₹सूत्र₹ होते हैं, जो लघु और आसानी से सीखने वाले गणितीय नियमों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बच्चे पेंसिल-और-पेपर विधियों का उपयोग करने के बजाय पैटर्न और संख्या संबंधों के माध्यम से मानसिक गणना करना सीखते हैं। यह दृष्टिकोण बच्चों को अपने आत्मविश्वास के स्तर को विकसित करते हुए रचनात्मकता के साथ संख्याओं को संभालने में सक्षम बनाता है। बच्चों के लिए क्या लाभ हैं

1.। तेजी से गणना और मानसिक गणित वैदिक गणित तकनीकों का उपयोग करने वाले बच्चे, कैलकुलेटर के साथ जटिल मानसिक गणित की समस्याओं को अधिक तेज़ी से हल कर सकते हैं।

बच्चे इन मानसिक शॉर्टकट से लाभान्वित होते हैं, क्योंकि वे समय बचाने में मदद करते हैं, विशेष रूप से प्रतिस्पर्धी परीक्षणों के दौरान जहां गति महत्वपूर्ण है।

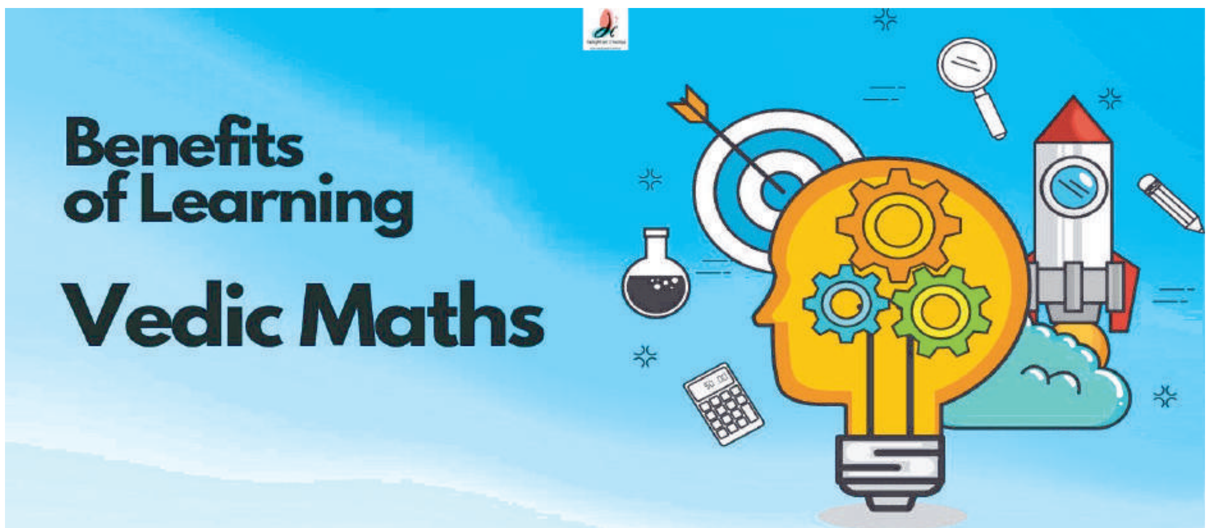

2.। आत्मविश्वास को बढ़ाता है और गणित की चिंता को कम करता है मुश्किल गणितीय संचालन उन बच्चों के लिए सरल हो जाता है जो सफलता का अनुभव करते हैं।

वैदिक विधियों के परिणामस्वरूप छात्र उपलब्धि होती है, जो सकारात्मक सीखने का दृष्टिकोण बनाते समय आत्मविश्वास विकसित करती है।

3। फोकस, मेमोरी और एकाग्रता में सुधार करता है मानसिक गणना की प्रक्रिया बच्चों को स्पष्ट सोच क्षमताओं के साथ-साथ अपने दिमाग पर ध्यान केंद्रित करने और स्मृति कौशल विकसित करने की अपनी क्षमता विकसित करने में मदद करती है।

इस प्रणाली का अभ्यास सामान्य बौद्धिक प्रदर्शन के साथ समस्या को सुलझाने की क्षमताओं को विकसित करता है।

4। संख्या संवेदना और तार्किक सोच को बढ़ाता है वैदिक गणित की गणितीय प्रणाली छात्रों को संख्या संबंधों के बारे में सिखाती है, जबकि बुनियादी अंकगणितीय तथ्यों को याद करने की आवश्यकता को समाप्त करती है।

सिस्टम छात्रों को सख्त कदम-दर-कदम प्रक्रियाओं का पालन करने के लिए मजबूर करने के बजाय अनुकूलनीय सोच को बढ़ावा देता है।

5.। लर्निंग फन एंड एंगेजिंग बनाता है सिस्टम गणित को एक आकर्षक पहेली प्रारूप में परिवर्तित करता है जो छात्र जिज्ञासा को उत्तेजित करता है। छात्र अपनी प्रेरणा बनाए रखते हैं, क्योंकि वे चतुर गणित के गुर करके, और तेजी से समाधान प्रदान करके अपने कौशल का प्रदर्शन करने में आनंद लेते हैं।

क्या यह उपयोगी है कैलकुलेटर और कंप्यूटर के साथ आधुनिक तकनीकी युग, मैनुअल गणना कम महत्वपूर्ण लगता है। हालांकि, वैदिक गणित कई मायनों में प्रासंगिक बना हुआ हैः

तेजी से मानसिक गणना क्षमता, स्कूल परीक्षण और प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा लेते समय छात्रों को एक प्रमुख प्रतिस्पर्धी लाभ प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम बच्चों को आत्मविश्वास के साथ वित्तीय लेनदेन और समय प्रबंधन / माप कार्यों को संभालना सिखाता है। गणित के शुरुआती संपर्क से विज्ञान और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन होता है।

आधुनिक समय में हर पेशा समस्या को सुलझाने की क्षमताओं के साथ-साथ स्मृति समारोह और अभिनव सोच पर मूल्य रखता है। क्या कोई कमियां हैं कोई भी सिस्टम परफेक्ट नहीं है। इसी तरह, बुनियादी संचालन तेजी से हो जाता है जब छात्र वैदिक गणित को एक अतिरिक्त उपकरण के रूप में सीखते हैं जो उनकी संख्या भावना कौशल विकसित करता है। छात्रों को पारंपरिक स्कूली शिक्षा के तरीकों को नहीं रोकना चाहिए, क्योंकि उन्नत गणितीय समझ ज्यामिति, पथरी और उच्च गणित विषयों के लिए पारंपरिक तरीकों की मांग करती है। माता-पिता और शिक्षक वैदिक गणित का परिचय कैसे दे सकते हैं

छोटे बच्चे घर पर ही सरल जोड़ और गुणा चाल के अपने सीखने शुरू कर सकते हैं। बच्चों को वैदिक तरीके सिखाएं, किराने की खरीदारी करते समय या स्नैक्स साझा करते समय, या मजेदार प्रतियोगिताओं के दौरान। बच्चे 5 से 10 मिनट के दैनिक अभ्यास के माध्यम से प्रवाह और आत्मविश्वास दोनों प्राप्त कर सकते हैं। वैदिक तकनीकों का उपयोग मानक स्कूल गणित पाठ्यक्रम को बदलने के बजाय एक अतिरिक्त संसाधन के रूप में किया जाना चाहिए।

रोजगार की फिक्र और और खर्च का दायरा

विजय गर्ग

मनरेगा वित्तीय मामले में देश की अन्य सभी योजनाओं से बिल्कुल अलग मानी जाती रही है। इस योजना को प्रारंभ में नरेगा नाम से चलाया गया था, , ₹जिसे दो अक्तूबर, 2009 में मनरेगा कर दिया गया। पिछले कुछ दिनों से यह योजना काफी सुर्खियों में है, जिसका कारण है केंद्रीय वित्त मंत्रालय की और से किया गया एक नीतिगत परिवर्तन। इससे मनरेगा भी अब अन्य योजनाओं की तरह वित्तीय खर्च सीमा के दायरे में आ गई है। मनरेगा मतलब 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम'। यह दुनिया की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी योजना है। इसे एक मांग आधारित योजना कहा जाता है। मांग अर्थात हर एक वह ग्रामीण परिवार जिसके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक कार्य करने के लिए स्वेच्छा से तैयार हों, वे एक वित्तीय वर्ष में कम से कम सौ दिनों तक रोजगार की मांग कर काम पा सकते हैं। मांग का सीधा तात्पर्य है कि जब जरूरत हो, तब रोजगार दिया जाएगा और उसका भुगतान होगा। मांग किए जाने के पंद्रह दिनों के भीतर रोजगार उपलब्ध न हो पाने पर मांगकर्ता राज्य सरकारों से बेरोजगारी भत्ता पाने का हकदार होगा।

बेरोजगारी भत्ता आरंभिक तीस दिनों के लिए न्यूनतम मजदूरी का एक चौथाई तथा बाद की अवधि के लिए न्यूनतम मजदूरी का आधा होगा। नियमानुसार कार्य में आधी आबादी को वरीयता देते हुए न्यूनतम एक तिहाई महिला लाभार्थी होनी चाहिए। रोजगार पांच किलोमीटर के दायरे में प्रदान किया जाएगा। यदि यह पांच किलोमीटर से अधिक है, तो अतिरिक्त मजदूरी का भुगतान किया जाएगा। कार्यस्थल पर श्रमिकों के दुर्घटना के शिकार होने पर प्रतिपूर्ति की भी व्यवस्था है। इसके अलावा कार्यस्थल पर मृत्यु अथवा स्थायी दिव्यांगता की स्थिति में अनुग्रह र राशि भी प्रदान की जाती है। मनरेगा इतनी सारी खूबियों के साथ कुल मिला कर जरूरतमंद को काम देने के निमित्त सरकार को नैतिक रूप बाध्यकारी बनाती है, जो वित्तीय दायरे को पार कर सकती है, इसलिए यह एक योजना के साथ कानून भी है। मगर, अब केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने इस योजना को भी मासिक या त्रैमासिक (एमएपी/क्यूएफपी) व्यय से बांधने की ओर कदम बढ़ाया है। मासिक या त्रैमासिक व्यय केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2017 में शुरू किया गया था, जिसका मकसद सरकारी विभागों का अपने खर्च पर सख्त निगहबानी करना तथा यह सुनिश्चित करना है कि खर्च बजटीय प्रावधानों के अनुरूप ही चले। मनरेगा को भी अब मासिक या त्रैमासिक व्यय के तहत चलाने के क्रम में पहली बार वित्त वर्ष 2025 2026 की प्रथम छमाही में कुल वार्षिक बजट 6,000 करोड़ रुपए आबंटन के सापेक्ष अधिकतम साठ फीसद यानी 51,600 करोड़ रुपए खर्च की सीमा रेखा तय कर दी गई है है आठ जून, 2025 तक इस योजना के कुल बजट का 28.47 फीसद ही खर्च हो पाया , जबकि वित्तीय वर्ष 2024 2025 का लंबित भुगतान 21,000 करोड़ रुपए है। मासिक या त्रैमासिक व्यय सीमा लागू होने से पहले ग्रामीण विकास मंत्रालय ने शुरुआत में अधिक खर्च की मांग की थी और इस नई व्यवस्था का विरोध किया, मगर वित्त मंत्रालय ने नकदी प्रवाह के बेहतर प्रबंधन और अनावश्यक उधारी से बचने का तर्क देकर केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय है, की मांग को सिरे से खारिज कर दिया।

विलंबित भुगतान के संबंध में यह गौर करने लायक है कि मनरेगा अधिनियम के तहत पंद्रह दिनों के भीतर पारिश्रमिक दिए जाने का प्रावधान है। अधिनियम की धारा 3(3) में स्पष्ट उल्लेख है

कि दैनिक मजदूरी का वितरण किसी भी मामले में उस तारीख से एक पखवाड़े के बाद नहीं किया जा सकता, लेकिन प्रावधानों के ठीक उलट कई राज्यों में महीनों से मनरेगा

के तहत भुगतान सहित अन्य देनदारियां लंबित पड़ी हैं। इन्हीं सब कारणों से बीते वित्तीय वर्ष 2024 2025 का तकरीबन 21,000 करोड़ रुपए का भुगतान लंबित है। उल्लेखनीय है कि मनरेगा वर्ष 2006 में जब शुरू की गई, तो यह पहले चरण में देश के मात्र 200 जनपदों में ही लागू की गई। बाद में वित्तीय वर्ष 2008-2009 में इसकी सफलता को देखते हुए इसे सौ फीसद शहरी क्षेत्रों को छोड़ते हुए पूरे देश में लागू कर दिया गया। योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण इलाकों से पलायन को कम करना, अकुशल श्रमिकों के रोजगार को सुनिश्चित करना, ग्रामीण क्रय शक्ति को बढ़ावा देना, गांवों में गरीबी व अमीरी का भेद कम करना, गांवों अस्थायी व स्थायी परिसंपत्तियों का सृजन करना है।

वित्तीय इन उद्देश्यों में मनरेगा काफी हद तक कामयाब भी रही है, फलस्वरूप वर्ष 2020 2021 -2021 के दौरान कोरोना काल में जब शहरों के बजाय गांवों की तरफ पलायन शुरू हुआ तो मनरेगा अकुशल श्रमिकों के लिए संकटमोचक बनकर खड़ी हुई। उस समय रेकार्ड 7.55 करोड़ परिवार इस योजना से लाभान्वित हुए, जबकि वित्तीय वर्ष 2024 2025 में मात्र 5.79 करोड़ परिवारों को इसका लाभ मिला।₹

आश्चर्य की बात है कि पर्याप्त बजट और समय से भुगतान का प्रावधान होने के बावजूद 'दशकों से । यह योजना पूरे देश में चल रही हैं, फिर भी 21,000 करोड़ रुपए की देनदारियां कैसे अटक गईं? वित्त मंत्रालय का तर्क है कि इन्हीं सब विसंगतियों को दूर करने के लिए अब सभी योजनाओं की तरह मनरेगा को भी मासिक या त्रैमासिक व्यय के दायरे शामिल किया गया है। वित्त मंत्रालय का मानना है इस कदम से राज्यों पर तय समय सीमा के भीतर भुगतान करने का दबाव बनेगा और देनदारियां कम होंगी, लेकिन पंचायत प्रतिनिधियों और नीति, रीति के जानकारों के बीच बहस का विषय यह कि जब मनरेगा एक मांग आधारित योजना , तो अधिक काम की मांग होने पर तयशुदा बजट कैसे आर्थिक प्रतिपूर्ति कर पाएगा। संभवतः यह पहली ऐसी योजना है, जो जनकेंद्रित और नीचे से ऊपर की ओर चलने वाली है। मांग निचले स्तर अर्थात ग्राम पंचायतों से आती है तो इसे साठ फीसद खर्च से क्यों बांधा जाए? पंचायत प्रतिनिधियों की चिंता है कि मनरेगा को खर्चे में बांध देने से अगर रोजगार की अधिक मांग आ गई तो रोजगार कैसे दिया जाएगा नई व्यवस्था से लंबित बकाया की बड़ी धनराशि पुराने भुगतान में चली नतीजतन नए रोजगार सृजन की संभावनाएं कम हो सकती हैं। ऐसे में अब सरकार को चाहिए कि आगे की राह सुगम करने के लिए पंचायत प्रतिनिधियों, श्रमिकों व मनरेगा से संबंधित अकुशल समस्त कार्मिकों के भरोसे की बहाली के लिए लंबित देनदारियों के शीघ्र निपटारे की समुचित व्यवस्था की जाए और भविष्य में ऐसे दुरें पर न जाने के लिए कुछ ठोस रणनीति बनाई जाए। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय राज्यों से बेहतर समन्वय स्थापित करे, जिससे कार्य आसान हो, खर्च नियंत्रण जमीनी हकीकत के आधार पर हो व पारदर्शिता और पुख्ता हो । सरकार द्वारा मनरेगा का मूल ढांचा अर्थात मांग आधारित प्रावधान बरकरार रखते हुए खर्चे की सीमा भले ही नियत कर दी गई है, मगर आवश्यकता पड़ने पर तत्काल धनराशि जारी करने की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे हर जरूरतमंद को सही समय पर काम व उसका दाम मिल सके जाएगी

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

मानव अंडे दशकों तक कैसे ताजा रहते हैं

विजय गर्ग

मानव अंडे अपने कचरे को अन्य कोशिकाओं की तुलना में अधिक धीरे-धीरे निपटाने लगते हैं, जो उन्हें पहनने और आंसू से बचने में मदद कर सकते हैं - और समझाएं कि वे लंबे समय तक क्यों रहते हैं।

प्रत्येक महिला का जन्म अंडे की कोशिकाओं, या अण्डाणुकोशिका की एक परिमित संख्या के साथ होता है, जिसे लगभग पांच दशकों तक जीवित रहने की आवश्यकता होती है। कोशिकाओं के लिए, यह असामान्य रूप से लंबा समय है। हालांकि कुछ मानव कोशिकाएं, जैसे मस्तिष्क और आंखों में, जब तक आप करते हैं, तब तक रह सकती हैं, अधिकांश में बहुत कम जीवनकाल होते हैं, क्योंकि प्राकृतिक प्रक्रियाएं जो उन्हें कार्य करने की अनुमति देती हैं, उन्हें समय के साथ नुकसान भी पहुंचाती हैं।

कोशिकाओं को अपने प्रोटीन को आवश्यक हाउसकीपिंग के रूप में रीसायकल करना चाहिए - लेकिन यह एक लागत पर आता है। इस प्रक्रिया में खपत होने वाली ऊर्जा प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों, या आरओएस नामक अणु उत्पन्न कर सकती है, जो कोशिका में यादृच्छिक क्षति का कारण बनती है। ₹यह पृष्ठभूमि में हर समय हो रहा नुकसान है,₹ ₹वहां जितना अधिक आरओएस है, उतना ही अधिक नुकसान होने वाला है

लेकिन स्वस्थ अंडे इस मुद्दे से बचते हैं। यह जानने के लिए कि क्यों, बोके और उसके सहयोगियों ने माइक्रोस्कोप के नीचे मानव अंडे की कटाई का अध्ययन किया। कोशिकाओं को फ्लोरोसेंट रंगों के साथ एक तरल में रखा गया था, जो अम्लीय सेलुलर घटकों को बांधता है, जिसे लाइसोसोम कहा जाता है, जो ₹रीसाइक्लिंग पौधों₹ के रूप में

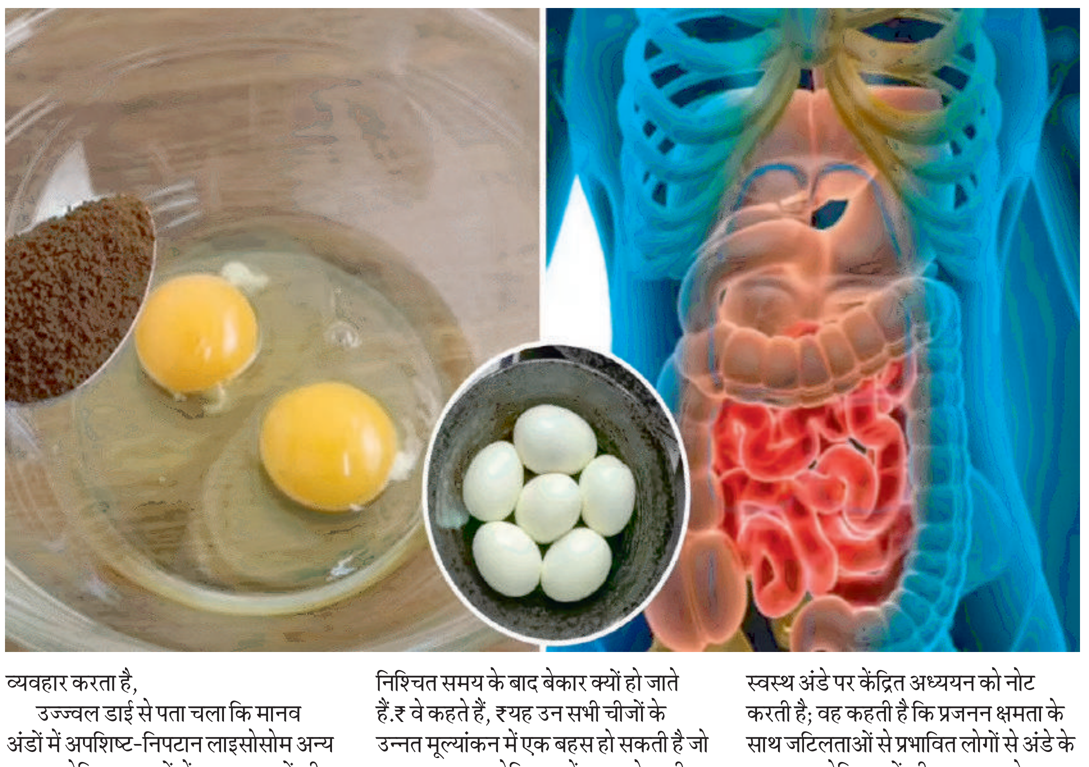

व्यवहार करता है,

उज्ज्वल डाई से पता चला कि मानव अंडों में अपशिष्ट-निपटान लाइसोसोम अन्य मानव कोशिका प्रकारों में समान घटकों की तुलना में कम सक्रिय थे या चूहों की तरह छोटे स्तनधारियों के अंडे की कोशिकाओं में। ज़फगनिनी और उनके सहयोगियों का कहना है कि यह आत्म संरक्षण का एक रूप हो सकता है।

चूंकि प्रोटीन-रीसाइक्लिंग प्रक्रिया में देरी करने से अंडे की कोशिकाओं को उनके स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिलती है, ऐसा करने में विफल रहने से यह समझा जा सकता है कि कुछ oocytes अस्वस्थ क्या बनाता है। येल स्कूल ऑफ मेडिसिन में एमरे सेली कहते हैं, ₹जिस तरह से मैं यह देख रहा हूं, यह इस बात का सुराग हो सकता है कि मानव अण्डाणुकोशिका वास्तव में एक निश्चित समय के बाद बेकार क्यों हो जाते हैं.₹ वे कहते हैं, ₹यह उन सभी चीजों के उन्नत मूल्यांकन में एक बहस हो सकती है जो मानव अण्डाणुकोशिका में गलत हो जाती हैं.₹

फ्लोरोसेंट डाई एक मानव अंडे की कोशिका को रोशन करती है, जो माइटोकॉन्ड्रिया (नारंगी) और डीएनए (हल्का नीला) जैसे घटकों का खुलासा करती है

गैब्रिएल ज़फगनिनी / सेंट्रो डी रेगुलेसिओन जेनोमिका

इस तरह से अंडे के स्वास्थ्य का आकलन करना अंततः प्रजनन उपचार में सुधार कर सकता है। बोके कहते हैं, ₹हम जानते हैं कि कोशिका के अस्तित्व के लिए प्रोटीन का क्षरण ज़रूरी है, इसलिए यह 100 प्रतिशत प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है.₹ वह स्वस्थ अंडे पर केंद्रित अध्ययन को नोट करती है; वह कहती है कि प्रजनन क्षमता के साथ जटिलताओं से प्रभावित लोगों से अंडे के साथ उन कोशिकाओं की तुलना करने का काम चल रहा है। ₹यदि सेल में उच्च आरओएस है, तो खराब आईवीएफ परिणाम हैं

मानव अंडे की कोशिकाओं को अभी भी अच्छी तरह से समझा नहीं जाता है, क्योंकि वे अध्ययन करना मुश्किल है। बोके कहते हैं, "उनके साथ काम करना मुश्किल है, क्योंकि नमूना सीमा एक मुद्दा है." सेली का कहना है कि यह बाधा समस्या के लिए ₹कई परतों₹ में से एक है, जिसमें अंडे की कोशिकाओं के अध्ययन को प्रतिबंधित करने वाले नियम और धन की कमी शामिल है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर

सांध्य वेला में: विजय गर्ग

कुछ समय पहले एक सुबह मित्र ने वाट्सएप पर एक 'रील' भेजी । उसमें गर्मी की एक सुबह-सवेरे गांव-देहात की कच्ची सड़कों पर बुजुर्ग दादा अपनी पोती को साइकिल पर स्कूल छोड़ने जा रहे थे। पोती साइकिल के पीछे कैरियर पर दादा के ऊपर छाता ताने चिपक कर खड़ी है। देख कर अंदाजा लग जाता है कि बेशक लोग समझें या न समझें, लेकिन बुजुर्गों का साथ अगली पीढ़ियों के लिए किस कदर अनमोल होता है। कहा भी जाता है कि दो ही चीजें इंसान को समझदार बनाती हैं- एक किताबें, जो आप पढ़ते हैं । और दूसरे बुजुर्ग, जिनसे आप मिलते हैं। हर बुजुर्ग अपने पोते-पोतियों और नाती नातिनों की देखभाल करके, उन्हें प्यार और स्नेह देकर तथा उन्हें अमूल्य जीवन कौशल सिखाते असीम सुख अनुभव करता है। घर-परिवारों में बुजुर्गों के होने भर के कितने ही फायदे हैं, बेशक वे खाली बैठे या लेटे ही क्यों न रहें! बच्चों को उनके हवाले छोड़ कर माता - पिता कहीं भी बेफिक्री से आ-जा सकते हैं, उनके रहते घर से निकलते वक्त ताले लगाने और आकर खोलने का झंझट भी नहीं रहता ।

जब बुजुर्ग होते हैं, तो उनकी अहमियत नजर अंदाज हो जाती है। लेकिन उनके बगैर अनेक छोटी- बड़ी दिक्कतों का रोज-रोज सामना करना पड़ता है। एक फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' में बखूबी दिखाया गया है कि गांव के एक बुजुर्ग का लंबे समय तक घर में ठहर जाना दंपति को अखरता है, जबकि उन्हें उसके जाने के बाद उसके रहने से होने वाली सहूलियतों का अहसास हो पाता है । किसी ने एक वाकया सुनाया। एक रेलगाड़ी जा रही थी । डिब्बे में एक अकेले बुजुर्ग ही सवार थे। अगले स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी, तो नौ-दस नौजवान लड़के उसमें सवार हो गए। हमउम्र लड़कों की टोली का लड़ना- झगड़ने और शरारतें करने को आदत के ' तौर पर ही देखा जाता है । एक ने कहा कि 'यारो, मस्ती सूझ रही है, कुछ मजा लिया जाए । मजाक मजाक में ट्रेन की जंजीर खींचते हैं...'! अभी उसने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि दूसरे ने टोका- 'जंजीर खींचते ही ट्रेन रुक जाएगी। टीटी आते ही हमारी शामत आ जाएगी। बेवजह जंजीर खींचने के जुर्म में चालान भरना पड़ेगा । खामख्वाह रुपए चुकाने पड़ेंगे, वरना जेल की हवा खानी पड़ेगी।' तीसरा लड़के ने चेताया और सलाह दी, 'शरारत से पहले देख लो कि हमारी जेबों में रुपए कितने हैं!' सभी अपनी-अपनी जेबें टटोलने लगे। किसी की जेब में सौ निकले, तो किसी के दो सौ रुपए । कुल मिला कर बमुश्किल पंद्रह सौ रुपए गए।

चुपचाप बैठा बुजुर्ग लड़कों की बातें गौर से सुन रहा था । इतने में, उसमें से एक लड़के के मन में तरकीब सूझी। वह बोला, 'हम जंजीर भी खीचेंगे, मजा भी आएगा और नाम इस बूढ़े का लगा देंगे। इससे हमारे पैसे भी बच जाएंगे।' खैर, लड़कों ने जंजीर खींच दी ! ब्रेक लगने की आवाज के साथ ट्रेन के पहिए ठहर गए। दो-चार मिनट में टीटी आ गया। पूछने लगा, 'भैया, जंजीर किसने खींची है ?' लड़के बूढ़े की ओर इशारा करते हुए बोले, 'जी, उन्होंने..!' टीटी ने बुजुर्ग की ओर रुख किया और पूछा, 'आपने खींची है?' बुजुर्ग के पास बचने का कोई चारा तो था नहीं, तो उसने बड़ी समझदारी से अपनी गलती कबूल करते-करते माना, 'हां, जंजीर मैंने ही खींची है! मैं और करता भी क्या ? मेरे पास पंद्रह सौ रुपए थे, तो इन लड़कों ने जोर-जबरदस्ती से छीन लिए। मैं जंजीर न खींचता, तो क्या करता । मेरे रुपए दिला दीजिए, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।' टीटी ने रेल पुलिस को फोन करके बुला लिया। लड़कों की जेबों की तलाशी ली गई, तो पूरे पंद्रह सौ रुपए निकले। पुलिस ने रुपए बुजुर्ग को दिए और लड़कों को पकड़ कर ले चली। बुजुर्ग धीमे स्वरों में कहने लगा, 'मैंने यों ही बाल सफेद नहीं किए।'

इस उद्धरण को बुजुर्गों के समय के हिसाब से विवेक के आधार पर परिस्थितियों का सामना करने के संदर्भ में समझा जा सकता है। युवाओं के बीच कई बार सामाजिक व्यवहार के मामले में जिस तरह की अपरिपक्वता देखी जाती है, उसमें इसे एक सीख देने वाले अध्याय के तौर पर देख सकते हैं।

सच यह है कि बुजुर्ग अपने अनुभवों से युवा पीढ़ी को सही और गलत का अंतर समझा सकते हैं और कठिन परिस्थितियों से निपटने के तरीके बता सकते हैं। ढलती उम्र में फल न भी दें पाएं, तो उनकी छांव भी बड़ी आरामदायक होती है। इसलिए हमेशा परिवार के बुजुर्गों की सेवा करने को ईश्वर तुल्य पूजा माना जाता है। यह तय है कि बुजुर्ग अपने अनुभव, ज्ञान और मार्गदर्शन से अगली पीढ़ियों को सिखा सकते हैं, परिवारों को मजबूत कर सकते हैं, पारिवारिक विवादों को घर की चारदीवारी में सुलझाने का दम रखते हैं ।

बुजुर्ग परिवार के सदस्यों को एक साथ लाते हैं, एकता- सद्भाव बनाते हैं, सामाजिक मूल्यों को उभारने और मजबूत करने में मदद करते हैं। परिवार के रीति-रिवाजों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। अपनी मातृभाषा घर में बोलते हैं, जिससे अगली पीढ़ियां उनके साथ से ही काफी सीख जाती हैं। अपनी बातों में कहावतों को मिला कर, बच्चों के दिल-दिमाग में ऐसे घोल देते हैं कि वे ताउम्र भूल नहीं पाते। सच यह है कि हर बुजुर्ग समाज के लिए अमूल्य है । फिल्मी तर्ज पर इसे यों कह सकते हैं- 'धूप हो, छाया हो.. दिन हो कि रात रहे, बुजुर्गों का साथ रहे..।'

रूस-चीन की पहल, भारत की कुंजी: क्या बदलेगा वैश्विक समीकरण?

वैश्विक मंच पर एक नया भू-राजनीतिक तूफान आकार ले रहा है, जो पश्चिमी प्रभुत्व की नींव हिला सकता है। यूरेशिया के तीन दिग्गज देशों—भारत, रूस और चीन—के बीच एक त्रिपक्षीय गठजोड़ को पुनर्जनन देने की कोशिशें न केवल क्षेत्रीय समीकरणों को बदल रही हैं, बल्कि विश्व व्यवस्था को एक नए युग की ओर धकेल रही हैं। यह उभरता हुआ गठबंधन पश्चिमी सैन्य और राजनयिक गठजोड़ों, विशेष रूप से अमेरिका और उसके सहयोगियों, के लिए एक ऐसी चुनौती बन सकता है, जो उनकी रातों की नींद उड़ा दे। इस पहल की अगुआई रूस ने की है, जिसे चीन का पूर्ण समर्थन मिला है, और अब सबकी निगाहें भारत पर टिकी हैं, जो इस त्रिकोणीय साझेदारी को निर्णायक दिशा दे सकता है।

यह त्रिपक्षीय संवाद, जिसे कभी 1990 के दशक में एक बहुध्रुवीय विश्व की नींव के रूप में देखा गया था, अब पुनर्जनन की राह पर है। रूस के नेतृत्व ने इस मंच को पुनर्जनन की पहल की, जिसे बीजिंग ने तुरंत समर्थन दिया। रूसी उप विदेश मंत्री ने हाल ही में कहा कि मॉस्को इस प्रारूप को फिर से सक्रिय करने के लिए नई दिल्ली और बीजिंग के साथ गहन बातचीत कर रहा है। यह गठजोड़ यूरेशिया में एक समतुल्य सुरक्षा ढांचा स्थापित करने की क्षमता रखता है, जो पश्चिमी गठजोड़ों के दबाव को संतुलित कर सकता है। बीजिंग ने इस सहयोग को न केवल तीनों देशों के हितों के लिए बल्कि वैश्विक शांति, स्थिरता और प्रगति के लिए भी महत्वपूर्ण बताया है। दूसरी ओर, भारत ने सावधानी बरतते हुए कहा कि इस मंच को पुनर्जनन का निर्णय सभी पक्षों के लिए उपयुक्त समय और परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। यह सतर्कता भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक मंच पर उसकी संतुलनकारी भूमिका को रेखांकित करती है।

इस गठजोड़ का पुनर्जनन पश्चिमी शक्तियों, विशेष रूप से अमेरिका और उसके सैन्य गठजोड़, के लिए एक गंभीर खतरे के रूप में उभर रहा है। आर्थिक और सैन्य दृष्टिकोण से, यूरेशिया के ये तीन देश मिलकर एक ऐसी शक्ति का निर्माण कर सकते हैं, जो वैश्विक समीकरणों को नया रूप दे। विश्व बैंक के 2024 के आंकड़ों के अनुसार, इन तीनों देशों की संयुक्त जीडीपी लगभग 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था का 30% हिस्सा है। सैन्य शक्ति की बात करें तो, सिपरी (स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट) के 2023 के आंकड़ों के अनुसार, चीन और रूस दुनिया के शीर्ष पांच सैन्य खर्च करने वाले देशों में हैं, जबकि भारत 83.6 बिलियन डॉलर के रक्षा बजट के साथ चौथे स्थान पर है। इन देशों का एकजुट होना न केवल आर्थिक और सैन्य ताकत का प्रदर्शन है, बल्कि यह वैश्विक मंच पर एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उभर सकता है, जो पश्चिमी प्रभुत्व को सीधी चुनौती देता है।

इस गठजोड़ का महत्व केवल आर्थिक और सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की ओर इशारा करता है, जो एकध्रुवीय प्रभुत्व को समाप्त कर बहुध्रुवीय विश्व को बढ़ावा दे सकती है। रूस और चीन लंबे समय से पश्चिमी सैन्य और राजनयिक गठजोड़ों, विशेष रूप से नाटो और क्वाड, के प्रभुत्व को कम करने की कोशिश में हैं। रूसी विदेश मंत्रालय ने 2025 में दावा किया कि पश्चिमी गठजोड़ एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अस्थिरता को बढ़ावा दे रहे हैं। इस त्रिपक्षीय मंच के जरिए रूस और चीन एक ऐसा ढांचा तैयार करना चाहते हैं, जो क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान पश्चिमी हस्तक्षेप के बिना, स्वदेशी दृष्टिकोण से करे। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से अमेरिका के लिए चिंताजनक है, क्योंकि यह उसके वैश्विक नेतृत्व को कमजोर कर सकता है। यदि यह गठजोड़ पूरी तरह सक्रिय हो जाता है, तो विश्व के कई देश, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ के देश, विवादों के समाधान और आर्थिक सहयोग के लिए पश्चिम की बजाय इस मंच की ओर रुख कर सकते हैं।

भारत की भूमिका इस गठजोड़ में सबसे महत्वपूर्ण और जटिल है। वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति एक भरोसेमंद और संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभरी है। भारत न केवल ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों में सक्रिय है, बल्कि क्वाड जैसे पश्चिमी समर्थित गठजोड़ों का भी हिस्सा है। रूस और चीन भारत को इस त्रिकोण में शामिल करके न केवल अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते हैं, बल्कि क्वाड जैसे गठजोड़ों की प्रभावशीलता को भी कम करना चाहते हैं। रूसी विश्लेषकों का मानना है कि यह त्रिकोण यूरेशिया में स्थिरता और सहयोग के लिए एक नया मॉडल पेश कर सकता है। हालांकि, भारत के लिए यह निर्णय आसान नहीं है। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद, विशेष रूप से 2020 के गलवान संघर्ष, ने दोनों देशों के बीच अविश्वास को बढ़ाया था। फिर भी, 2024 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान भारत और चीन के नेताओं की मुलाकात और लद्दाख में गश्ती व्यवस्था बहाल करने की सहमति ने इस दिशा में सकारात्मक संकेत दिए हैं।

पश्चिमी देशों, विशेष रूप से अमेरिका, के लिए यह गठजोड़ एक रणनीतिक झटका हो सकता है। अमेरिका ने भारत को अपने पाले में रखने के लिए कई कदम उठाए हैं, जैसे कि भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग को मजबूत करना और क्वाड को बढ़ावा देना। लेकिन हाल के वर्षों में अमेरिका का पाकिस्तान के साथ बढ़ता रुझान और भारत के खिलाफ कुछ नीतियां, जैसे रूस से तेल आयात पर प्रतिबंध की धमकी, ने भारत को सतर्क कर दिया है। 2025 में अमेरिकी प्रशासन ने रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों पर 100% टैरिफ की धमकी दी थी, जिसका भारत ने कड़ा जवाब दिया। भारत ने स्पष्ट किया कि वह अपनी ऊर्जा जरूरतों और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देगा। इस त्रिपक्षीय गठजोड़ का पुनर्जनन इस संदर्भ में न केवल पश्चिमी दबाव का जवाब है, बल्कि भारत की बढ़ती वैश्विक स्वायत्तता और प्रभाव का भी प्रतीक है।

इस गठजोड़ के पुनर्जनन से वैश्विक व्यवस्था में एक नया अध्याय शुरू हो सकता है। यह न केवल यूरेशिया में शक्ति संतुलन को प्रभावित करेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती दे सकता है। यह गठजोड़ न केवल आर्थिक और सैन्य सहयोग को बढ़ावा देगा, बल्कि वैश्विक समस्याओं, जैसे जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और आर्थिक असमानता, के समाधान के लिए एक नया दृष्टिकोण पेश कर सकता है। हालांकि, इस रास्ते में कई चुनौतियां हैं। भारत-चीन संबंधों की जटिलताएं, भारत की रणनीतिक स्वायत्तता की नीति और पश्चिमी देशों के साथ उसके संबंध इस गठजोड़ की सफलता को प्रभावित करेंगे। फिर भी, यदि यह त्रिकोण प्रभावी रूप से कार्य करता है, तो यह न केवल तीनों देशों के हितों को मजबूत करेगा, बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए एक नया मॉडल प्रस्तुत करेगा। यह विश्व व्यवस्था को बहुध्रुवीय बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम हो सकता है, जो पश्चिमी शक्तियों के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

उच्च शिक्षण संस्थानों में मुसलमानों की सहभागिता में कमी एक गंभीर चुनौती

शम्स आग़ाज़

शिक्षा किसी भी समाज की तरक्की, जागरूकता और खुशहाली का सबसे प्रभावशाली और टिकाऊ ज़रिया है। यह न केवल व्यक्ति के मानसिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का माध्यम है, बल्कि एक ऐसी ताक़त है जो सामाजिक न्याय, आर्थिक आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक खोजों और राष्ट्रीय एकता को मज़बूती देती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सशक्त बनता है, अपने अधिकारों से परिचित होता है और राष्ट्रीय विकास में सक्रिय भूमिका निभाता है।

भारत जैसे विशाल, विविध और लोकतांत्रिक देश में जहाँ विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और भाषाओं के लोग रहते हैं, वहाँ शिक्षा तक समान पहुँच हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। विशेष रूप से अल्पसंख्यकों के लिए, शिक्षा न केवल विकास का ज़रिया है, बल्कि उनकी पहचान, आत्मविश्वास और सामाजिक समावेश की गारंटी भी है। हाल ही में जारी ₹ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE)₹ की रिपोर्ट के अनुसार, उच्च शिक्षा में मुस्लिम समुदाय की भागीदारी में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है। यह न केवल चिंता का विषय है, बल्कि एक राष्ट्रीय चुनौती भी है। ज़रूरत इस बात की है कि इस गिरते रुझान पर तत्काल ध्यान दिया जाए, नीति निर्माण में पारदर्शिता लाई जाए और अल्पसंख्यकों के लिए विशेष शैक्षणिक अवसर उपलब्ध कराए जाएँ ताकि हर नागरिक को समान अवसर मिलें और विकास की दौड़ सभी के लिए समान हो।

AISHE की रिपोर्ट के मुताबिक 2021-2022 में भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों में कुल 4 करोड़ 32 लाख 68 हज़ार 181 छात्रों ने दाख़िला लिया, जिनमें मुसलमान छात्रों की संख्या केवल 21 लाख 8 हज़ार 33 थी। इसका अर्थ है कि मुस्लिम छात्रों की भागीदारी महज़ 4.87% रही। यह न केवल राष्ट्रीय स्तर पर उनकी जनसंख्या के अनुपात से कम है, बल्कि पिछले वर्षों के मुकाबले निरंतर गिरावट को दर्शाती है। साल 2020 में यह प्रतिशत 5.5% था, जो 2021 में घटकर 4.6% रह गया। इस प्रवृत्ति से स्पष्ट है कि यदि यही हालात बने रहे तो भविष्य में मुस्लिम छात्र उच्च शिक्षा से और भी दूर हो सकते हैं।

यह गिरावट केवल कुल आँकड़ों में ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में जहाँ मुस्लिम आबादी बहुसंख्यक है, वहाँ उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी 34.5% रही, जो कि अपेक्षाकृत संतोषजनक है, लेकिन राज्य का सकल नामांकन अनुपात (GER) केवल 24.8% है, जो राष्ट्रीय औसत के बराबर है। इसके विपरीत अरुणाचल प्रदेश में मुस्लिमों की भागीदारी केवल 0.16% है, जबकि वहाँ का GER 36.5% है। इसका अर्थ है कि मुस्लिम समुदाय वहाँ उच्च शिक्षा से लगभग पूरी तरह बाहर है। केरल, जो शैक्षणिक दृष्टि से अग्रणी राज्य माना जाता है, वहाँ मुस्लिम छात्रों की भागीदारी 14.36% है और GER 41.3% है, जो देश की सबसे ऊँची दरों में से एक है। हरियाणा और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में मुस्लिम छात्रों की भागीदारी क्रमशः 0.99% और 0.41% है, जो बेहद कम है। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य, जहाँ मुस्लिमों की आबादी सबसे अधिक है, वहाँ उनकी भागीदारी मात्र 4.68% है। पश्चिम बंगाल में स्थिति थोड़ी बेहतर है जहाँ 12.33% छात्र मुस्लिम हैं, लेकिन यह दर भी वहाँ की जनसंख्या के अनुपात से कम है।

इस गिरावट के पीछे कई गहन और जटिल कारण हैं, जिन पर गंभीरता और संवेदनशीलता से विचार किया जाना आवश्यक है। देश के अधिकांश मुस्लिम परिवार गरीबी या कम आय की स्थिति में हैं, जहाँ रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करना ही एक चुनौती है। ऐसे में बच्चों की शिक्षा को अतिरिक्त बोझ समझा जाता है और अक्सर बच्चे कम उम्र में ही काम पर लगा दिए जाते हैं। इसका सीधा असर उच्च शिक्षा पर पड़ता है। कई मुस्लिम-बहुल इलाक़ों में बुनियादी ढाँचे की भारी कमी है—जहाँ न अच्छे स्कूल हैं, न कॉलेज और न विश्वविद्यालय। विशेषकर छात्राओं को दूर-दराज़ के इलाक़ों में जाना पड़ता है, जिससे वित्तीय, सुरक्षा और सामाजिक दबाव बढ़ते हैं और शिक्षा बाधित हो जाती है। कुछ परिवार धार्मिक या सांस्कृतिक कारणों से लड़कियों की उच्च शिक्षा को अनावश्यक समझते हैं या उन्हें सीमित दायरे में रखने को प्राथमिकता देते हैं। यद्यपि अल्पसंख्यकों के लिए कई योजनाएँ और छात्रवृत्तियाँ मौजूद हैं, लेकिन आम लोगों तक उनकी जानकारी नहीं पहुँचती या जटिल प्रक्रिया के कारण वे लाभ नहीं उठा पाते। कई मुस्लिम छात्र और अभिभावक वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली पर भरोसा नहीं करते। उन्हें लगता है कि शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी उन्हें समान अवसर नहीं मिलेंगे और वे सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े ही रहेंगे।

इन कारणों के चलते शिक्षा के क्षेत्र में मुस्लिम समुदाय की गिरती भागीदारी के व्यापक और दीर्घकालिक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जब कोई पूरा समुदाय शैक्षणिक रूप से पीछे रह जाए तो वह स्वतः ही विकास की मुख्यधारा से कट जाता है। एक बड़ी जनसंख्या यदि शिक्षा से वंचित रहेगी तो वह न केवल स्वयं विकास से वंचित होगी बल्कि देश की समग्र प्रगति पर भी असर डालेगी। शिक्षा ही ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सकती है। मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा दर बहुत कम है, जिससे आत्मविश्वास, सामाजिक भूमिका और बेहतर जीवन के अवसर नहीं बन पाते।

इस समस्या का समाधान केवल सरकारी योजनाओं या अस्थायी नीतियों से नहीं, बल्कि एक समग्र और संगठित रणनीति से संभव है। मुस्लिम समाज को स्वयं शिक्षा की अहमियत को समझना होगा। घर, मोहल्ला, मस्जिद और मदरसों में शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। सरकार को मुस्लिम छात्रों के लिए विशेष छात्रवृत्ति और आरक्षण नीतियों को विस्तार देना चाहिए और इनका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की स्थापना होनी चाहिए। मुस्लिम NGOs और शैक्षणिक संस्थानों को कम लागत वाले कोचिंग सेंटर, छात्रावास, परिवहन और छात्रवृत्ति संबंधी जानकारी देने की पहल करनी चाहिए। माता-पिता की काउंसलिंग और जागरूकता आवश्यक है ताकि वे बच्चों की शिक्षा को महत्व दें, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष योजनाएँ चलाई जाएँ। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से भी इस अंतर को पाटा जा सकता है। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ओपन यूनिवर्सिटीज़ और वर्चुअल लर्निंग के ज़रिए कम लागत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा सकती है।

यदि भारत को वास्तव में एक विकसित, समरस और संतुलित समाज बनाना है तो आवश्यक है कि सभी वर्गों को समान शैक्षणिक अवसर दिए जाएँ। मुसलमानों की उच्च शिक्षा में घटती हुई भागीदारी एक गंभीर और चिंता का विषय है। इस पर यदि तत्काल और ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो इसके परिणाम केवल मुस्लिम समाज के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश की सामाजिक एकता और प्रगति के लिए भी नकारात्मक हो सकते हैं। समय की माँग है कि शिक्षा नीति में पारदर्शिता, न्याय और समानता सुनिश्चित की जाए ताकि हर नागरिक चाहे उसका धर्म, जाति या क्षेत्र कोई भी हो शिक्षा की रौशनी से लाभान्वित होकर देश की तरक्की में समान रूप से भागीदारी निभा सके।

03 बांग्लादेशी नागरिकों को मुखर्जी नगर से दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया

नई दिल्ली। अवैध आव्रजन नियंत्रण के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता और अथक प्रयासों के प्रमाण के रूप में, दिल्ली पुलिस के उत्तर-पश्चिम जिले के विदेशी प्रकोष्ठ ने 14-15 जुलाई, 2025 की मध्यरात्रि में मुखर्जी नगर क्षेत्र से तीन अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को सफलतापूर्वक गिरफ्तार किया। यह अभियान दस दिनों की निरंतर निगरानी, खुफिया जानकारी एकत्र करने और सफल गिरफ्तारियों को सुनिश्चित करने के लिए समर्पित टीम द्वारा रणनीतिक तैनाती का परिणाम था। कुछ बांग्लादेशी नागरिकों को देर रात मुखर्जी नगर इलाके में संदिग्ध रूप से घूमते देखे जाने की विश्वसनीय खुफिया जानकारी के आधार पर, दिल्ली पुलिस के उत्तर-पश्चिम जिले के विदेशी प्रकोष्ठ ने तुरंत एक गुप्त अभियान शुरू किया। एसआई श्याम बीर, एसआई सपन, एएसआई राजेंद्र सिंह, एएसआई विजय, हेड कांस्टेबल विक्रम, हेड कांस्टेबल कपिल कुमार, हेड कांस्टेबल टीका राम, हेड कांस्टेबल प्रवीण, हेड कांस्टेबल विकास यादव, पत्नी/हेड कांस्टेबल सीमा, पत्नी/हेड कांस्टेबल दीपक, कांस्टेबल निशांत मट्टू, कांस्टेबल हवा सिंह और कांस्टेबल दीपक बांगर की एक समर्पित टीम का गठन इंस्पेक्टर विपिन कुमार (विदेशी प्रकोष्ठ) की कड़ी निगरानी और श्री राजीव कुमार, एसीपी/विदेशी प्रकोष्ठ के समग्र पर्यवेक्षण में किया गया। संदिग्धों को पकड़ने के बाद, एक विस्तृत सत्यापन प्रक्रिया अपनाई गई। उनके दस्तावेजों की जांच की गई और उनकी राष्ट्रीयता की पुष्टि के लिए, बांग्लादेश से उनके मोबाइल फोन के जरिए पहचान संबंधी विवरण मांगे गए। इस प्रक्रिया से यह निर्णायक रूप से स्थापित हो गया कि तीनों भारत में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिक थे। पूछताछ के दौरान, यह भी पता चला कि वे उत्तर-पश्चिम जिले के विभिन्न हिस्सों में कूड़ा बीनने और छोटी-मोटी चोरी की गतिविधियों में लिप्त थे। यह सावधानीपूर्वक नियोजित अभियान दिल्ली पुलिस की राष्ट्रीय सुरक्षा और आव्रजन कानूनों के सख्त प्रवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पकड़े गए व्यक्ति बिना वैध यात्रा दस्तावेजों या परमिट के भारत में रह रहे थे, जिससे विदेशी अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन हो रहा था।

गिरफ्तार व्यक्तियों का विवरण: -

क्रम संख्या नाम लिंग आयु पता

1. मोहम्मद अकरम हुसैन पुत्र लेफ्टिनेंट रामजीत पुरुष 43 वर्ष गाँव- गुग्गा बिल पड्डा, पोस्ट- गुग्गा बिल पड्डा, थाना- शारशा, जिला- जेस्सोर, राज्य- जेस्सोर, बांग्लादेश।
2. खोकन मोल्ला उर्फ खोकन पुत्र मोहम्मद कुटी मोल्ला उर्फ सिद्दीक मुल्ला, पुरुष 44 वर्ष, गाँव- शिरुआइल, डाकघर- शिरुआइल, थाना- शिबचर, जिला- मदारीपुर, राज्य- मदारीपुर, बांग्लादेश।

पाक प्रेरित आतंकवाद पर बदलते अमेरिकी-चीनी रूख के वैश्विक मायने

कमलेश पांडेय/वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

दुनिया के थानेदार अमेरिका ने पाकिस्तान समर्थित और भारत के पहलगाम आतंकी हमले के गुनहगार ₹द रेसिस्टेंस फ्रंटर₹ (TRF) को वैश्विक आतंकी संगठन घोषित करके भारत से हाल ही में बेपटरी होते जा रहे कूटनीतिक सम्बन्धों को संभालने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है। इससे जहां पाकिस्तान और चीन को करारा झटका लगा है, वहीं अमेरिका के इस हृदय परिवर्तन से यह स्पष्ट हो चुका है कि दुनिया के दोनों ध्रुवों को एक साथ साधते रहने की कोशिश करने वाले भारत के ताजा कूटनीतिक प्रयासों की जीत हुई है, लेकिन अभी भी पहलगाम आतंकी हमले के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाया जाना बाकी है।

बता दें कि टीआरएफ पाकिस्तान के लश्कर-ए-तैयबा का ही एक चेहरा यानी प्रॉक्सी संगठन है। जब लश्कर और उसके सरगना हाफिज सईद पर कार्रवाई के लिए पाकिस्तान पर वैश्विक दबाव बढ़ने लगा, तो 2019 में उसने टीआरएफ को प्रॉक्सी के तौर पर खड़ा कर दिया। यह जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की घुसपैठ ही नहीं, हथियारों और ड्रग्स की तस्करी में भी शामिल है। सरकार ने 2023 में इस पर बैन लगाया था। उल्लेखनीय है कि टीआरएफ को संसाधन और समर्थन दे रहा लश्कर-ए-तैयबा पहले ही ग्लोबल टेररिस्ट ग्रुप घोषित किया जा चुका है। इसी तरह आतंकी मसूद अजहर के जैश-ए-मोहम्मद पर भी प्रतिबंध लगे हुए हैं। इसके बावजूद, ये दोनों आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं। दिखाने के लिए हाफिज सईद को जेल में रखा गया है, लेकिन उसकी गतिविधियां पहले की तरह जारी हैं।

यही वजह है कि लश्कर या जैश जैसे आतंकी संगठन अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद खत्म नहीं हो पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें पाकिस्तान की तरफ से निरंतर खुराफाती खुराक मिलती आई है। आलम यह है कि जब इस्लामाबाद पर अमेरिकी दबाव बढ़ता है, तो वह दिखावटी कदम उठा लेता है और आतंकवाद का कोई एक नया चेहरा तैयार कर दिया जाता है। इसलिए टीआरएफ के मामले में अमेरिका को पाकिस्तान के सामने यह मुद्दा उठाना चाहिए कि लश्कर पर बैन होने के बावजूद कैसे उसने एक दूसरा फ्रंट बना लिया?

दरअसल, सीमापार आतंकवाद को लेकर वॉशिंगटन का

नजरिया भारत से बिल्कुल अलग दिखता है। तभी तो पहलगाम आतंकी हमले के पीछे पाकिस्तानी सेना प्रमुख असीम मुनीर की भी स्पष्ट भूमिका दिखाई देने के बावजूद कुछ ही दिनों बाद डॉनल्ड ट्रंप व्हाइट हाउस में उनकी मेजबानी करते दिखे। इसलिए यदि अमेरिका टीआरएफ पर बैन का कोई सार्थक नतीजा देखना चाहता है, तो उसे पाकिस्तानी सेना पर प्रेशर बनाना चाहिए। कहना न होगा कि पहलगाम आतंकी हमले और पाकिस्तान के बीच

कनेक्शन के कई सबूत सामने आए हैं। इसलिए टीआरएफ पर एक्शन का इस्तेमाल भारत को पाकिस्तान की घेरेबंदी करने और वैश्विक मंच पर उसे बेनकाब करवाने में करना चाहिए।

सबसे खास बात यह है कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान को करारा जवाब दिए जाने हेतु शुरू किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता के बाद चीन के साथ-साथ भारत के चतुर्गुट (कवाड) सहयोगी देश अमेरिका ने भी जब पाकिस्तान की पहले परोक्ष, फिर प्रत्यक्ष तरफदारी की तो भारतीय कूटनीति पर सवाल उठने लगे थे। हालांकि, अमेरिका को पता है कि पाकिस्तान अब उससे ज्यादा चीन के इशारे पर खेलता है। इसी चक्कर में अमेरिका को अफगानिस्तान भी गंवाना पड़ा। यही वजह है कि जैसे वह पाकिस्तान से करीबी दिखाना शुरू किया, भारत ने अमेरिका से दूरी बनानी और नीतिगत परहेज शुरू कर दिया। यही वजह है कि भारत में क्वाड की प्रस्तावित बैठक के शुरू होने से पहले अमेरिका ने भारत की डिमांड पर गौर करना शुरू किया और टीआरएफ को वैश्विक आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया। इससे भारत को इस बात की उम्मीद बढ़ी कि अमेरिका से भूल सुधार करवाने में उसकी गुटनिरपेक्ष नीतियां सक्षम हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि टीआरएफ भले ही वैश्विक आतंकी संगठन घोषित किया जा चुका है लेकिन भारत का काम अभी अधूरा है। फिर भी भारत ने पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन लश्करे तैयबा के मुखौटा संगठन द रेसिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) को वैश्विक आतंकवादी संगठन घोषित करने के अमेरिका के फैसले का स्वागत किया।

रक्तदान जागरूकता मानव विकास में सहायक

कहा जाता है कि ₹रक्तदान महादान है₹। वर्तमान समय में मानवीय भूल के कारण अनेक दुर्घटनाएँ हो रही हैं। यातायात नियमों का उल्लंघन भी इसमें बड़ी भूमिका निभा रहा है। ऐसे समय में सड़क दुर्घटनाओं के दौरान रक्त की हानि होने पर इसकी अत्यंत आवश्यकता होती है, लेकिन इसे लेकर तरह-तरह की अफवाहों के कारण लोग समय पर रक्तदान के लिए आगे नहीं आते, जिससे मानव जीवन खतरे में पड़ जाता है। इसलिए युवा विद्यार्थियों और प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए ताकि मानव जीवन बचाकर राष्ट्र का विकास किया जा सके। इसी श्रृंखला के अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों और शिक्षण संस्थानों में रक्तदान शिविरों का आयोजन कर जागरूकता पैदा की जाती है। 'विश्व रक्तदान दिवस' हर साल मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ ने रक्तदान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। साल 2004 में इस दिन की स्थापना इसलिए की गई थी, जिससे लोगों को रक्तदान के लिए प्रोत्साहित करना और रक्त उत्पादों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। बहुत से लोग रक्तदान करने से डरते हैं, लेकिन जानकारी और जागरूकता से इस डर को दूर किया जा सकता है। आइए रक्तदान के बारे में जानकारी प्राप्त करें। छात्रों को मुसीबत के समय रक्तदान ज़रूर करना चाहिए। कई लोग स्वस्थ होते हुए भी रक्तदान करने से डरते हैं, क्योंकि उनके मन में इससे जुड़ीं कई भ्रांतियां होती है। आइए आज हम आपकी रक्तदान (ब्लड डोनेशन) से जुड़ीं भ्रांतियों को दूर करते हैं और इस महादान से संबंधित जरूरी बातें आपको बताते हैं -::

एक औसत व्यक्ति के शरीर में 10 यूनिट यानी (5-6 लीटर) रक्त होता है। रक्तदान करते हुए डोनर के शरीर से केवल 1 यूनिट रक्त ही लिया जाता है। एक्सीडेंट (दुर्घटना) में ही, चोटिल व्यक्ति को 100 यूनिट तक के रक्त की जरूरत पड़ जाती है। आप 3 लोगों की जिंदगी बचा सकते हैं। भारत में सिर्फ 7 प्रतिशत लोगों का ब्लड ग्रुप 'O नेगेटिव' है। 'O नेगेटिव' ब्लड ग्रुप यूनिवर्सल डोनर कहलाता है, इसे किसी भी ब्लड ग्रुप के व्यक्ति को दिया जा सकता है। इमरजेंसी के समय जैसे जब किसी नवजात बालक या अन्य को खून की आवश्यकता हो और उसका ब्लड ग्रुप ना पता हो, तब उसे 'O नेगेटिव' ब्लड दिया जा सकता है। ब्लड डोनेशन की प्रक्रिया काफी सरल होती है और रक्त दाता को आमतौर पर इसमें कोई तकलिफ नहीं होती हैं, व्यक्ति 18 से 60 वर्ष की आयु तक रक्तदान कर सकता हैं। रक्त दाता का वजन, पल्स, ब्लड प्रेशर, बॉडी टेम्परेचर आदि चीजों के सामान्य पाए जाने पर ही डॉक्टर्स या ब्लड डोनेशन टीम के सदस्य आपका ब्लड लेते हैं। पुरुष 3 महीने और महिलाएं 4 महीने के अंतराल में नियमित रक्तदान कर सकती हैं। हर कोई रक्तदान नहीं कर सकता। यदि आप स्वस्थ हैं, आपको किसी प्रकार का बुखार या बीमारी नहीं हैं, तो ही आप रक्तदान कर सकते हैं। आइए, रक्तदान करें और दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करें। विद्यार्थी समुदाय को इस कार्य के लिए आगे आकर समाज को नई दिशा प्रदान करनी चाहिए।

क्या सचमुच समृद्धि लाएगी प्राकृतिक खेती

सचिन त्रिपाठी

भारत की खेती सदियों से प्रकृति पर आधारित रही है गोबर, नीम, धूप, हवा और पानी लेकिन हरित क्रांति के बाद रसायनों का उपयोग खेती का मूल हिस्सा बन गया। यह बदलाव अनाज की पैदावार तो बढ़ा दिया लेकिन भूमि की उर्वरता, जल स्रोतों की शुद्धता और मानव स्वास्थ्य की कीमत पर। अब एक बार फिर देश का किसान रसायन मुक्त खेती की ओर लौट रहा है। यह सिर्फ एक 'विकल्प' नहीं बल्कि कृषि का भविष्य बनता जा रहा है।

रसायन मुक्त खेती का मतलब है उर्वरकों, कीटनाशकों और हर्बीसाइड्स जैसे रासायनिक इनपुट्स के बिना खेती करना। इसमें जैविक खाद (गोबर, वर्मी कम्पोस्ट), जैविक कीटनाशक (नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्नास्त्र), फसल चक्र, मिश्रित फसल प्रणाली, जीवामृत, बीजामृत आदि का प्रयोग किया जाता है।

रसायन मुक्त खेती में जैविक खादों के उपयोग से मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ती है जिससे मिट्टी की संरचना बेहतर होती है। नेशनल सेंटर फॉर ऑर्गेनिक फार्मिंग के अनुसार, मिट्टी की जैविक संरचना में 40% सुधार पाया गया वहां, जहां लगातार 3 वर्ष तक जैविक तरीके अपनाए गए। रासायनिक खाद और कीटनाशक साल दर साल महंगे होते जा रहे हैं। एफएओ की रिपोर्ट (2022) के अनुसार, भारत में रासायनिक उर्वरकों पर किसान औसतन 6000-8000 रुपए प्रति एकड़ खर्च करता है। रसायन मुक्त खेती में यह लागत घटकर 2000-3000 रुपए तक रह जाती है। जैविक या केमिकल-फ्री उपज की मांग शहरी भारत और विदेशों में तेजी से बढ़ी है। भारत जैविक उत्पादों का ₹7000 करोड़ (2023) का निर्यात कर चुका है।

आईसीएआर की रिपोर्ट के अनुसार, रसायन मुक्त उत्पाद सामान्य उत्पादों की तुलना में 20% अधिक मूल्य प्राप्त करते हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रीशन, हैदराबाद के अनुसार लगातार रसायनों के उपयोग से किसानों में कैंसर, त्वचा रोग, नपुंसकता और आंखों की बीमारियां तेजी से बढ़ीं। रसायन मुक्त खेती इन जोखिमों को कम करती है। रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक नदियों, झीलों और भूमिगत जल को प्रदूषित करते हैं। इंडियन काउंसिल फॉर एनवायरनमेंटल हेल्थ की रिपोर्ट के मुताबिक, पंजाब और हरियाणा के क्षेत्रों में 80% से अधिक जल स्रोत नाइट्रेट से प्रदूषित पाए गए। रसायन मुक्त खेती जल स्रोतों को संरक्षित रखने में सहायक होती है।

रसायन मुक्त खेती अपनाने के शुरुआती 2-3 वर्षों में उत्पादन में 10-25% तक की गिरावट आती है। खासकर गेहूं, चावल जैसी प्रमुख फसलों में। यही कारण है कि गरीब किसान इसे अपनाने में हिचकते हैं। अधिकांश किसानों के पास जैविक प्रमाणन नहीं होता, जिससे उनके उत्पाद को उचित मूल्य नहीं मिल पाता। बड़ी कंपनियां 'ऑर्गेनिक' टैग के लिए मान्यता प्राप्त फॉर्म से ही उपज खरीदती हैं। बहुत से किसानों को यह जानकारी नहीं होती कि जीवामृत कैसे बनाएं, मिश्रित फसल कैसे लगाएं, प्राकृतिक कीटनाशक कैसे बनाएं। इसकी वजह से वे गलत तकनीक अपनाकर असफल हो जाते हैं। भले ही कुछ राज्यों (जैसे सिक्किम, आंध्रप्रदेश, ओडिशा) ने इसे बढ़ावा दिया हो, परंतु पूरे भारत में रसायन मुक्त खेती के लिए कोई व्यापक नीति या सब्सिडी योजना नहीं है। इसके विपरीत रासायनिक खादों पर भारी सब्सिडी दी जाती है।

भारत में लगभग 43 लाख हेक्टेयर भूमि जैविक प्रमाणित है सिक्किम भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बन चुका है। आंध्रप्रदेश का जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग मॉडल तेजी से फैल रहा है, जिससे 50 लाख से अधिक किसान जुड़ चुके हैं। कर्नाटक और महाराष्ट्र में भी सैकड़ों गांवों को जैविक गांव घोषित किया गया है।

सरकार को उर्वरक सब्सिडी के एक हिस्से को रसायन मुक्त खेती के प्रोत्साहन में लगाना चाहिए। इसके अलावा हर जिले में जैविक उत्पादों के लिए अलग मंडियां स्थापित की जाएं। कृषि विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे स्थानीय परंपराओं और जलवायु आधारित मॉडल विकसित करें। आधुनिक तकनीक, डिजिटल मार्केटिंग और स्टार्टअप्स के जरिए जैविक उत्पाद को वैश्विक मंच तक पहुंचाया जा सकता है।

रसायन मुक्त खेती भारत के किसानों के लिए एक स्थायी, लाभकारी और सामाजिक रूप से सुरक्षित मार्ग है। यह न केवल लागत घटाती है, बल्कि किसानों को उपभोक्ताओं से सीधे जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है। हां, इसकी राह आसान नहीं है, लेकिन जब देश की मिट्टी, पानी और स्वास्थ्य की बात हो, तब कठिनाइयां अवसर बन जाती हैं। भारत को अगर भविष्य की ओर देखना है, तो रसायन मुक्त खेती उसकी नींव होनी चाहिए। क्योंकि हर खेत सिर्फ अनाज नहीं उगाता, वह आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी बोता है।

सीबीआई जांच हो, साबित हुआ तो राजनीति छोड़ दूंगा

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बालेश्वर के फकीर मोहन कॉलेज के छात्र की मौत के मामले में राज्य की राजनीति गरमाती और गिरती जा रही है। क्राइम ब्रांच मामले की जाँच कर रही है, वहीं बालासोर के सांसद प्रताप सारंगी ने आंतरिक समिति (आईसीसी) की रिपोर्ट का खुलासा किया है। एफएम कॉलेज के चेयरमैन दिलीप घोष पर हत्या का आरोप लगाया गया है।इसके साथ ही, पीसीसी अध्यक्ष भक्त दास और बीजद विधायक गौतम बुद्ध दास की कड़े शब्दों में आलोचना की गई है।

मैंने एक सांसद के रूप में जो कदम उठाने का फैसला किया है, वह मैंने उठाया है। अगर यह साबित हो जाता है कि मैं गलत हूँ या छात्रा की मौत की घटना में दबाव डाल रहा हूँ, तो मैं इस्तीफा देने के लिए तैयार हूँ। सांसद प्रताप चंद्र सारंगी ने बालासोर फकीर मोहन स्वायत्त महाविद्यालय की छात्रा आत्महत्या के मामले में विपक्ष को ऐसी ही खुली चुनौती दी है।

सांसद प्रताप चंद्र सारंगी ने शनिवार को बालासोर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर छात्रा की मौत की घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 2 जुलाई को जब वे बालासोर सर्किट हाउस में थे, तब छात्रा अपने कुछ साथियों के साथ शिकायत करने आई थी। उसने यौन उत्पीड़न की कोई शिकायत नहीं की। उसने बस इतना कहा कि विभागाध्यक्ष समीर साहू उससे फीस मांग रहे हैं, जो उसकी पहली शिकायत थी। दूसरी बात, कम उपस्थिति के कारण उसकी परीक्षा छूट गई है। उसकी माँ की स्वास्थ्य समस्याओं और डिफेंस ट्रेनर के कारण उसकी उपस्थिति कम है। लेकिन छात्रा ने आरोप लगाया कि उसे जानबूझकर अपमानित किया जा रहा है। प्रताप सारंगी ने कहा, ₹सांसद होने के नाते यह मेरा कर्तव्य था कि मैं उससे थाने में शिकायत दर्ज कराने को कहता। लेकिन छात्रा ने अपनी ओर से कहा कि प्रिंसिपल समझ रही हैं। कॉलेज ने 7 दिन का समय लिया है। इसी तरह, सांसद ने खुद एसपी और चेयरमैन से कई बार बात की। लेकिन छात्रा ने कोई जानकारी नहीं दी। छात्रा ने पुलिस को सूचना नहीं दी, लेकिन चेयरमैन ने फोन किया क्योंकि छात्र कॉलेज में विरोध प्रदर्शन कर रहे थे।₹ सांसद ने कहा कि उन्होंने खुद स्वायत्त कॉलेज में प्रवेश करना उचित नहीं समझा क्योंकि आईसीसी कॉलेज का निरीक्षण कर रही थी।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की शिकायत मंजिन्दर सिंह सिरसा जी से कर सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने संजय सम्राट के नेतृत्व में कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की शिकायत दिल्ली के पर्यावरण मंत्री, श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा जी से करी और उन्हें ज्ञापन भी दिया.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की, कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मेनेजमेंट (CAQM) द्वारा 1.11.2026 से दिल्ली के अंदर BS 4 डीजल (AITP) बसों की एंट्री रोकने के आदेश 3 जून 2025 को जारी कर भारत के बस मालिकों का आर्थिक और मानसिक शोषण करने की साजिश करी है. इसकी भी संभवाना की बस बनाने वाली कम्पनियो को बड़ा फायदा देने की कोशिस भी CAQM कर रहा है, क्योंकि जब पुरानी बसें बंद होंगीं तभी ट्रांसपोर्टर्स मजबूरी में नई बसें खरीदेंगे.

संजय सम्राट का कहना है की हमारी डीजल BS 4 बसें 2020 मार्च तक दिल्ली के पडोसी राज्यों में पंजीकृत हुई थी.क्योंकि पिछले 10 वर्षो से अधिक दिल्ली में कोई भी डीजल बसें और टेम्पो ट्रेवलर दिल्ली में रजिस्ट्रेशन नहीं हो रहे थे. हमारे दिल्ली के ट्रांसपोर्टर्स नें पडोसी राज्यों में डीजल BS 4 बसें रजिस्ट्रेशन कराई थी.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें पर्यावरण मंत्री से मांग करी है की हमारी BS 4 डीजल बसों की जितनी उम्र रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट में है उतनी उनको चलती रेहने दी जाए.

और इस आदेश पर पुनर्विचार करके इस आदेश को निरस्त करवाया जाए.

और वास्तव में प्रदूषण करने वाले हवाई जहाज की उम्र चेक करके उनका प्रदूषण चेक कराया जाए. बल्कि ये हवाई जहाज BS 4 हैं या BS 2 इनकी भी जांच की जाए. दिल्ली में प्रदूषण रोकने के लिए कृत्रिम बारिश या अन्य उपाय किये जाये.

इस विषय में पर्यावरण मंत्री श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा जी ने डीजल BS 4 बसों को 2026 से बंद ना करा जाए और टैक्सी टेम्पो ट्रेवलर को ग्रेप सिस्टम से हमेशा के लिए बाहर करने के लिए कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मैनेजमेंट के चेयरमैन से बात करने और पत्र लिखकर हमारी समस्याओ का समाधान करने का अस्वासन दिया हैं।

पिपिली में नाबालिग लड़की की जलादि, गंभीर रूप से घायल, भुवनेश्वर स्थानांतरित

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : महिला उत्पीड़न की एक और चौंकाने वाली घटना सामने आई है। पुरी जिले के नीमपाड़ा के बलंगा बाया बारा की एक छात्रा को बदमाशों ने आग के हवाले कर दिया। वह साइकिल से अपनी सहेली के घर जा रही थी, तभी तीन युवकों ने नाबालिग लड़की को रास्ते में रोक लिया और उस पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी।नाबालिग मरीज को गंभीर हालत में भुवनेश्वर स्थानांतरित कर दिया गया है।बलंगा पुलिस घटनास्थल पर मौजूद है। बालासोर एफएम छात्र की मौत ने जहाँ पूरे राज्य में हलचल मचा दी है, वहीं अब नीमपाड़ा में हुई इस घटना ने नागरिक समाज पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं।

बलंगा छात्रा के जलने की घटना पर समीर दाश ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, यह किसने और क्यों किया, यह पता नहीं चल पाया है। डॉक्टर ने बताया कि बेटी 60 प्रतिशत जल चुकी है। बेटी ने 10वीं के बाद 2 साल तक स्कूल छोड़ दिया है। पुलिस घटना की जाँच कर रही है। नाबालिग लड़की को एम्स ले जाया गया है और उसका इलाज चल रहा है।

अख़बारों में साहित्य की हत्या और शब्दकर्मियों की बेइज़्ज़ती

आज के अधिकांश अख़बारों से साहित्यिक पन्ने या तो पूरी तरह गायब हो चुके हैं या केवल खानापूरी तक सीमित हैं। लेखकों को छापकर उन्हें 'कृपा' का अनुभव कराया जाता है, परंतु सम्मानजनक मानदेय नहीं दिया जाता। अब कुछ मालिकान पुरस्कार योजनाएं बनाकर लेखक-सम्मान का दिखावा कर रहे हैं, जबकि बुनियादी ज़रूरत है – श्रम का मूल्य और साहित्य की जगह। लेखन कोई शौक नहीं, गहन परिश्रम है, जिसे मजूरी और मान चाहिए। पुरस्कार बाद में दीजिए, पहले लेखक को उसका मेहनताना दीजिए – यही सबसे बड़ा सम्मान होगा।

- डॉ सत्यवान सौरभ

कभी अख़बारों के साहित्यिक पृष्ठों को देश की आत्मा कहा जाता था। वहां सिर्फ खबरें नहीं होती थीं, बल्कि विचार, विवेक और संवेदना की साझी विरासत सांस लेती थी। लेकिन आज जब हम अख़बार पलटते हैं, तो खबरें हैं, विज्ञापन हैं, राजनेताओं के प्रवचन हैं, पर कविता, कहानी, ललित निबंध, समीक्षा और विचारधारा का साहित्यिक पक्ष गायब है।

बड़ी विडंबना है कि जो मीडिया 'प्रेस की स्वतंत्रता' और 'अभिव्यक्ति की आज़ादी' का झंडा उठाए घूमता है, उसी ने अपने सबसे जरूरी हिस्से – साहित्य और साहित्यकारों को हाशिए पर धकेल दिया है। अख़बारों से साहित्यिक पन्ने चुपचाप ग़ायब कर दिए गए, और जो कुछ बचे हैं, उनमें भी केवल खानापूरी चल रही है।

लिखने वाले बचे हैं, पर छापने वाला कौन?

आज भी भारत में हजारों लेखक, कवि, निबंधकार, विचारक अपने मन की बात समाज तक पहुंचाना चाहते हैं। पर उन्हें जगह कहां मिलती है? अगर आप किसी अख़बार में साहित्यिक लेख भेजें तो या तो 'संपादक व्यस्त हैं' का जवाब मिलेगा, या कोई जवाब ही नहीं। जवाब मिला तो यह नहीं मालूम कि वह अस्वीकृति है या केवल औपचारिकता। और अगर छप भी गया — तो मानदेय? वो तो जैसे गाली मांग ली हो! कई अखबार बिना एक पैसा दिए लेखकों से नियमित सामग्री प्रकाशित करते हैं। और कुछ जगहों पर तो एक ऐसी व्यवस्था है जिसे लेखक-शोषण का मॉडल कहा जा सकता है — ₹छप कर खुश हो जाइए, पैसे का सवाल मत उठाइए।₹

लेखकों का मानदेय नहीं, मगर मालिकान पुरस्कार देंगे!

अब सुनिए ताज़ा तमाशा —कुछ मीडिया संस्थान अब 'लेखकों को पुरस्कार' देने की योजना बना रहे हैं। वाह! आप पहले लेखकों से मुफ्त में लेख लिखवाते हैं, फिर उन्हें छपने के बदले में 'कृपा' समझते हैं, और अब पुरस्कारों का चारा डालकर आत्मसम्मान की हत्या कर रहे हैं। माना कि पुरस्कारों की परंपरा साहित्य में पुरानी है। लेकिन जब ये पुरस्कार उन हाथों से आने लगें जो लेखकों को रचनात्मक मजदूर नहीं, उपयोग की वस्तु समझते हैं, तो सवाल उठते ही हैं। क्या पुरस्कार उस संस्था की ओर से आना चाहिए जो मानदेय देने तक को बोझ समझती है?

'साहित्यिक पृष्ठ' अब सिर्फ रस्म अदायगी

अख़बारों में बचे हुए जो साहित्यिक कॉलम हैं, वे भी आज क्लबबाज़ी, गुटबाज़ी और व्यक्तिगत संबंधों की राजनीति के अड्डे बन चुके हैं। कुछ खास नामों को ही बार-बार छापा जाता है। नये लेखकों को तो जैसे इंट्री ही नहीं। मानदेय के नाम पर महीने भर बाद फोन घुमाइए, मेल भेजिए, और फिर भी... "आपका भुगतान प्रक्रिया में है"। कभी 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'कादम्बिनी', 'नवभारत टाइम्स' जैसे स्तम्भ साहित्य की आवाज़ थे। आज तो 'साहित्य' शब्द से ही कुछ संस्थानों को एलर्जी हो गई है।

शब्दकर्मी भी मजदूर हैं, सिर्फ माइक वाले नहीं

पत्रकारिता में कैमरामैन, रिपोर्टर, एंकर, डिज़ाइनर सभी को वेतन मिलता है। लेकिन लेखकों को अब भी 'हवा का प्राणी' माना जाता है — उन्हें केवल सम्मान की तसल्ली चाहिए, पैसे की नहीं। यह सोच गहरी असंवेदनशीलता की परिचायक है।

लेखक कोई शौकिया कलाकार नहीं है, वह समय, श्रम, अध्ययन और संवेदना की मिट्टी से रचना करता है। उसकी लेखनी समाज को दिशा देती है, जनचेतना जगाती है। फिर उसे मज़दूरी देने में कंजूसी क्यों?

क्या आप पत्रकारिता को बिना विचार के चलाना चाहते हैं?

आज का अख़बार कॉर्पोरेट और सत्ता के गठजोड़ का माध्यम बनता जा रहा है। लेकिन जो लोग अखबारों को पढ़ते हैं, वे केवल हादसे, घोटाले और राजनीति नहीं चाहते — वे चाहते हैं वो दृष्टिकोण, जो उन्हें सोचने के लिए मजबूर करे। और यह काम साहित्य और विचारधारा ही कर सकती है। साहित्य न हो तो अख़बार सिर्फ 'सूचना का कूड़ाघर' बन जाएगा।

सोचिए — अगर समाज को दिशा देने वाला साहित्य गायब कर दिया गया, तो आप सूचना की भीड़ में विचारों की कब्रगाह ही तो बना रहे हैं।

सम्मान तब जब श्रम की कीमत दी जाए

यदि आप लेखक को "हम आपको सम्मानित करेंगे" कह रहे हैं,

तो पहले यह भी सुनिश्चित कीजिए कि आप उसे समय पर भुगतान दे रहे हैं या नहीं, उसकी रचना को संपादित किए बिना तोड़-मरोड़ तो नहीं रहे, और उसे केवल 'भराव' का साधन तो नहीं बना रहे। सम्मान का सबसे पहला रूप होता है – श्रम का मूल्य। बाकी पुरस्कार, ट्रॉफी, सर्टिफिकेट, मंच — सब बाद में आते हैं।

एक अपील: शब्द का मूल्य जानिए

जो अख़बार अपने शब्दकर्मियों को मज़दूरी नहीं दे सकते,

उन्हें साहित्य के नाम पर आयोजन करने का नैतिक अधिकार नहीं है। यदि आप लेखक हैं, तो बिना मानदेय के रचना देना बंद कीजिए। खुले मंचों पर यह सवाल उठाइए कि साहित्य की जगह कहां है। और जो संस्थान आपको सिर्फ "छपने की खुशी" देते हैं, उनसे यह पूछिए — क्या यही लेखक का सम्मान है?

मीडिया की रीढ़ सिर्फ ब्रेकिंग न्यूज नहीं होती।

मीडिया की आत्मा वो विचार होते हैं, जो समाज को सजग बनाते हैं। और ये विचार आते हैं लेखकों, कवियों, चिंतकों, निबंधकारों की कलम से। अगर आपने उनकी कलम से मान देना बंद कर दिया,

तो एक दिन वही कलम आपके विज्ञापन-आधारित अखबारों की पोल खोल देगी।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने अपने 118वें स्थापना दिवस पर सफदरजंग अस्पताल को चिकित्सा उपकरण प्रदान किए

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली नई दिल्ली

नई दिल्ली: बैंक ऑफ बड़ौदा ने अपने स्थापना दिवस के अवसर पर, दिल्ली के प्रमुख स्वास्थ्य संस्थानों में से एक, सफदरजंग अस्पताल को आवश्यक चिकित्सा उपकरण प्रदान करके स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।हस्तांतरण समारोह में निम्नलिखित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। डॉ. संदीप बंसल, निदेशक, सफदरजंग अस्पताल, समीर ओझा, क्षेत्रीय प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आर.पी. अरोड़ा, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. रेखा तिर्की और डॉ. तिलक राज, वरिष्ठ संकाय सदस्य और विभाग प्रमुख, बैंक ऑफ बड़ौदा के दिल्ली क्षेत्र के शाखा प्रमुख

प्रदान किए गए उपकरण।

उन्नत इन्फ्यूज़न पंप, फिजियोथेरेपी उपकरण, प्रीमियम एयर गद्दे और लिम्फोप्रेस के लिए स्लीव। बैंक ऑफ बड़ौदा के क्षेत्रीय प्रबंधक, समीर ओझा ने कहा: "अपने स्थापना दिवस पर, हमें अपने देश के स्वास्थ्य सेवा ढांचे में योगदान देने पर गर्व है। सफदरजंग अस्पताल में यह योगदान सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक कल्याण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। स्वास्थ्य सेवा एक मौलिक अधिकार है, और हमें अपने समाज की सेवा करने वाले समर्पित चिकित्सा पेशेवरों का समर्थन करने पर गर्व है।"सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने आभार व्यक्त करते हुए कहा: "हम इस उदार योगदान के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा के अत्यंत आभारी हैं। यह चिकित्सा उपकरण हमारी रोगी देखभाल क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में हमारी चिकित्सा टीमों का समर्थन करेगा। वित्तीय संस्थानों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच ऐसी साझेदारियाँ हमारे स्वास्थ्य सेवा ढाँचे को मज़बूत करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।"यह योगदान कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा पहलों के प्रति बैंक ऑफ बड़ौदा की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इन उपकरणों का उपयोग सफदरजंग अस्पताल के विभिन्न विभागों में रोगी देखभाल और उपचार परिणामों को बेहतर बनाने के लिए किया जाएगा।

समारोह का समापन दोनों संस्थानों द्वारा समुदाय की सेवा करने और स्वास्थ्य सेवा सहायता में भविष्य में सहयोग के अवसरों की खोज करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि के साथ हुआ।

डी एम के आदेश ,एन जी टी का निर्देश के बाबजूद बालू माफिया -प्रशासन की गठजोड़ को परिषद की कडी चेतावनी

उल्टे जन प्रतिनिधि परिवार पर मामला दायर होने से परिषद नाराज । हड़कंप से रांची से सरायकेला तक बालू हायवा जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची/कुकड़ू /ईचागढ़ : सरायकेला खरसावां जिले के चांडिल अनुमंडल क्षेत्र में बालू के अवैध उठाव को लेकर जिला परिषद के जन प्रतिनिधियों ने जोरदार हमला बोला है । जिला मुख्यालय स्थित धर्मशाला में जिला परिषद अध्यक्ष सोनाराम बोदरा तथा उपाध्यक्ष मधुश्री महतो ने प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर दो टूक शब्दों में चेतावनी भरे लहजे में कहा जिला प्रशासन बालू माफियाओं पर कारवाई करें, अवैध बालू परिवहन को रोके या जन आन्दोलन का सामना करे । जिप अध्यक्ष सोनाराम बोदरा ने कहा कि विगत 12 जुलाई की रात ग्रामीणों ने कुकडु के सिरुम चौक पर दो ओवरलोड अवैध बालू लदे हाइवा को रोककर इसकी सूचना उपाध्यक्ष को दी है।

इलाके की ग्रामीणों की सूचना पर जिप उपाध्यक्ष मधुश्री महतो रात को सिरुम चौक में अवैध रूप से बालू का उठाव कर ले जाते दो हाइवा को रात को ही पकड़ा था । उक्त जानकारी सीओ सहित खनन विभाग को दी थी । पर संबंधित राजस्व अधिकारी सीओं को वहां पहुंचने में दुसरे दिन सुबह लग लग गये ।

फिर एएसआई व माइनिंग इंस्पेक्टर ने कानूनी कारवाई करते हुए दोनों वाहनों को थाना ले आये । मधु श्री के अनुसार तब तक वह अवैध बालू था ।पर बाद में जानकारी हुई उसी हाइवा पर लदे बालू तिरुलडीह सरकारी घाट से बालू उठा है. उन्होंने कहा रात को पकड़ा गया अवैध बालू के हाइवा को सुबह में तिरुलडीह सरकारी बालू स्टॉक यार्ड का दिखाया जाना केवल पुलिस नहीं अन्य एजेंसियो के लिये भी जांच का विषय बनता है आखिर किसने कब क्यों कागजात बनाकर गाड़ियों को छोड़ वाया है ?

बतौर जिला परिषद उपाध्यक्ष मधु श्री ने कहा अवैध बालू के संचालन में बालू माफिया व अधिकारियों के मिलीभगत से बड़ा सिंडिकेट यहां चलता है । जिसमें तकरीबन सौ से डेढ सौ संख्या में हाईवा समुचे इलाके में माफियाओं के जरिये दिन में एक दो बार अवैध बालू लिये संचालित रहते हैं ।आज हिम्मत इतनी है कि यहां एन जी टी के आदेश को भी यहां ठेंगा दिखा दिया जाता है ।

उपाध्यक्ष ने कहा कि उन्होंने 18 मार्च 25को पूर्व डी सी रवि शंकर शुक्ल को पत्र दिया था जिसके आलोक में उन्होंने वाकायदा सरकारी आदेश संख्या 1140/था, सरायकेला, दिनांक 24 अप्रैल को निकाला था ।जिसमें समय , दंडाधिकारी समेत वरीय दंडाधिकारी विधिवत नियुक्त किये गये थे । जो सिरूम चौक , मिलन चौक, ईचागढ़ थाना समीप स्थल पर था ।

देखा जाय तो उपायुक्त रवि शंकर के तबादले के बाद नये उपायुक्त आते ही उनकी नजर, जानकारी में न होने का फायदा लेते हुए माफिया ऐसे सक्रिय हैं कि उल्टा एक मामला संबंधित घटना पर उपाध्यक्ष के करीबियों पर दायर हुआ है ।जो झारखंड पुलिस नहीं वल्कि उच्चस्तरीय अन्य एजेंसियो के जरिये जांच का विषय है इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के तीन घंटे बाद अवैध हायवा कांड्रा में पकड़ाया गया है ।

सनद रहे कि रांची में पोल्स अस्पताल निर्माण संबंधी जांच के दौरान सरायकेला के दो विभागों को भी ईडी ने सम्मन भेजा था । आज उन अधिकारियों का स्थानांतरण हो चुका है । जिसका मतलब यह हुआ कि सरायकेला खरसावां जिले के इस क्षेत्र का वैध के साथ अवैध बालू बंगाल ही नहीं राजधानी रांची मे भी बिकता है । इसी क्रम में सिल्ली विधायक अमीत कुमार महतो भी अवैध बालू तस्करी अभियान में कूदे है । बीती रात महतो ने राहे थाना क्षेत्र के बसाहातु घाट पर अवैध बालू खनन और तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई कराई है । लगातार मिल रही शिकायतों के आधार पर, बुंडू डीएसपी ओम प्रकाश ने विशेष पुलिस टीम गठित कर छापेमारी की है. इस दौरान एक जेसीबी, पांच ट्रैक्टर, एक टर्बो, एक हाइवा और एक कार जब्त किया गया है. सभी गाड़ियों में बालू लदा हुआ है। उन्होंने जनप्रतिनिधि परिवार पर प्राथमिकी पर कहा कि सही बातो पर आवाज उठाने व अवैध खनन के खिलाफ अंकुश लगाने की मांग करने पर पर अगर हम ,हमारे पर प्राथमिकी दर्ज हो तो यह काफ़ी गंभीर मामला है । इस पर प्रशासन -पुलिस निष्पक्षता से जांच करे और कार्रवाई करें ,अन्यथा अन्य स्वतंत्र एजेंसियो से उचित जांच व करवाई कराने हेतु हम बाध्य हो जायेंगे ।न्याय पाना सबका अधिकार है अन्याय नहीं ।

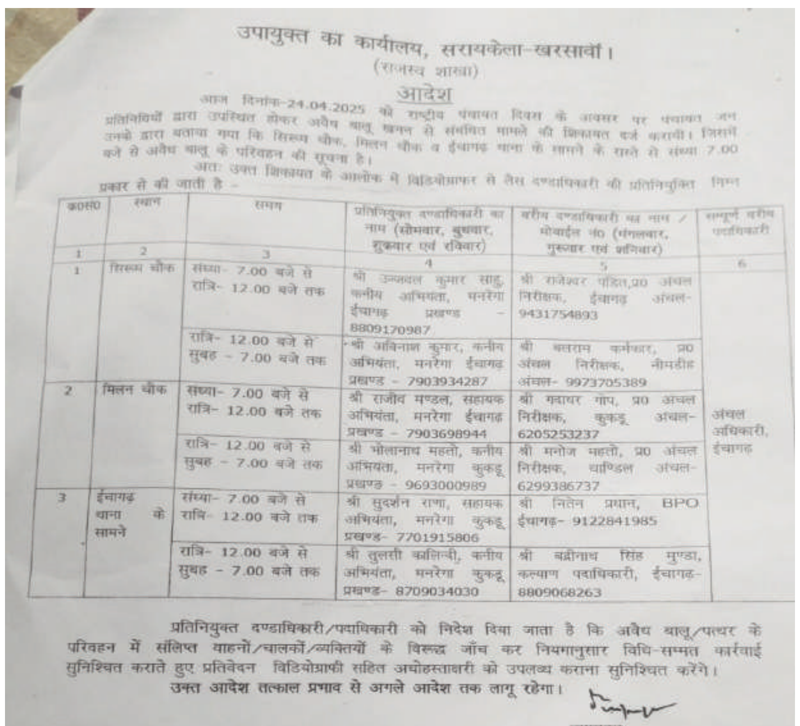

उपायुक्त का कार्यालय, सरायकेला-खरसावाँ।
(राजस्व शाखा)
आदेश

आज दिनांक-24.04.2025 को राष्ट्रीय पंचायत दिवस के अवसर पर पंचायत जन प्रतिनिधियों द्वारा उपस्थित होकर अवैध बालू खनन से संबंधित मामले की शिकायत दर्ज करायी। जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि सिरुम चौक, मिलन चौक व ईचागढ़ थाना के सामने के रास्ते से संध्या 7.00 बजे से अवैध बालू के परिवहन की सूचना है।

अतः उक्त शिकायत के आलोक में विडियोग्राफर से लैस दण्डाधिकारी की प्रतिनियुक्ति निम्न प्रकार से की जाती है -

क्र0सं0	स्थान	समय	प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी का नाम (सोमवार, बुधवार, शुक्रवार एवं रविवार)	वरीय दण्डाधिकारी का नाम / मोबाईल नं0 (मंगलवार, गुरुवार एवं शनिवार)	सम्पूर्ण वरीय पदाधिकारी
1	2	3	4	5	6
1	सिरुम चौक	संध्या- 7.00 बजे से रात्रि- 12.00 बजे तक	श्री उज्ज्वल कुमार साहु, कनीय अभियंता, मनरेगा ईचागढ़ प्रखण्ड - 8809170987	श्री राजेश्वर पंडित,प्र0 अंचल निरीक्षक, ईचागढ़ अंचल- 9431754893	अंचल अधिकारी, ईचागढ़
		रात्रि- 12.00 बजे से सुबह - 7.00 बजे तक	श्री अविनाश कुमार, कनीय अभियंता, मनरेगा ईचागढ़ प्रखण्ड - 7903934287	श्री बलराम कर्मकार, प्र0 अंचल निरीक्षक, नीमडीह अंचल- 9973705389	
2	मिलन चौक	संध्या- 7.00 बजे से रात्रि- 12.00 बजे तक	श्री राजीव मण्डल, सहायक अभियंता, मनरेगा ईचागढ़ प्रखण्ड - 7903698944	श्री गदाधर गोप, प्र0 अंचल निरीक्षक, कुकड़ू अंचल- 6205253237	
		रात्रि- 12.00 बजे से सुबह - 7.00 बजे तक	श्री भोलानाथ महतो, कनीय अभियंता, मनरेगा कुकड़ू प्रखण्ड - 9693000989	श्री मनोज महतो, प्र0 अंचल निरीक्षक, चाण्डिल अंचल- 6299386737	
3	ईचागढ़ थाना के सामने	संध्या- 7.00 बजे से रात्रि- 12.00 बजे तक	श्री सुदर्शन राणा, सहायक अभियंता, मनरेगा कुकड़ू प्रखण्ड- 7701915806	श्री नितेन प्रधान, BPO ईचागढ़- 9122841985	
		रात्रि- 12.00 बजे से सुबह - 7.00 बजे तक	श्री तुलसी कालिन्दी, कनीय अभियंता, मनरेगा कुकड़ू प्रखण्ड- 8709034030	श्री बद्रीनाथ सिंह मुण्डा, कल्याण पदाधिकारी, ईचागढ़- 8809068263	

प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी/पदाधिकारी को निदेश दिया जाता है कि अवैध बालू/पत्थर के परिवहन में संलिप्त वाहनों/चालकों/व्यक्तियों के विरुद्ध जाँच कर नियमानुसार विधि-सम्मत कार्रवाई सुनिश्चित कराते हुए प्रतिवेदन विडियोग्राफी सहित अधोहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

उक्त आदेश तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक लागू रहेगा।

उपायुक्त,
सरायकेला-खरसावाँ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023